राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

"विद्यालय प्रमुखों के लिए माड्यूल"

'राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र'

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

संरक्षक

श्री डी. राहुल वेंकट

(भा.प्र.से.)

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शन

डॉ. योगेश शिवहरे

अतिरिक्त संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

सह मार्गदर्शन

श्रीमती पुष्पा किसपोट्टा

उप संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

समन्वय

श्री डी. दर्शन

राज्य समन्वयक

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़

दिशा-निर्देशन

डॉ. चारु मलिक

राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, नई दिल्ली

तकनीकी सहयोग

श्री एम.जी. रात्रे

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, रायपुर

तकनीकी सहयोग

श्री सुनील सायतोड़े

राज्य विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, रायपुर

अनुक्रमणिका

क्र.	माड्यूल शीर्षक	**लेखक**	**पृ. क्र.**
1.	छ. ग. राज्य के प्राथमिक शाला के बच्चों में कुपोषण निवारण हेतु विद्यालय नेतृत्व की भूमिका	श्री के.के. साहू श्री लक्ष्मण राव मगर श्री बी.पी.चन्द्रा	1-10
2.	छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्व माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को पूर्व व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ने में विद्यालय नेतृत्व भूमिका	श्री गोपेश कुमार साहू श्री प्रद्युम्न कुमार शर्मा श्रीमती सुनीता पाण्डेय	11-21
3.	प्राथमिक स्तर के बच्चों को आसपास के परिवेश से जोड़कर सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) प्राप्त करने में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका	श्रीमती पुष्पा सिंह	22-38
4.	छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रो में प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बच्चों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के द्वारा शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका	डॉ. मकसूद अहमद	39-49

छ. ग. राज्य के प्राथमिक शाला के बच्चों में कुपोषण निवारण हेतु विद्यालय नेतृत्व की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा के साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर बहुत बल दिया गया है | जिसके अन्तर्गत आंगनबाड़ी, प्री प्राइमरी एवं बालवाटिका से स्कूली शिक्षा प्रभावों का अंग मानकर कक्षा 1 व कक्षा 2 के साथ सीखने के बुनियाद के रूप में रखा गया है |

अध्ययन में यह पाया गया है की बच्चों के स्वास्थ्य का संबंध उनकी माताओं के स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है | इस परिप्रेक्ष्य के राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन द्वारा 2019 के किये गए सर्वे का यह आंकड़ा भयावह है जिसमें यह पाया गया है कि छ.ग. के बस्तर एवं सरगुजा जिला के 15 से 49 वर्ष के बीच की महिलाओं में लगभग 65% महिलाएं एनीमिया से पीड़ित है तथा 0-6 वर्ष के बच्चों का प्रतिशत 27.7% है| इन्ही सब बातों के ध्यान में रखकर महात्मा गाँधी जी की 100 वीं जयंती (02 अक्टूबर 2019) पर मुख्यमंत्री सुपोषण अभियान चलाया जा रहा है जिसमे यह संकल्प व्यक्त किया गया है की आने वाले 3 वर्ष के अन्दर छ.ग. को कुपोषण मुक्त किया जाना है |

उपरोक्त अभियान के अंतर्गत महिला एवं बाल विकास विभाग के द्वारा माताओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार एवं कुपोषण मुक्ति हेतु विभिन्न योजनाओं तथा पूरक पोषक आहार, मुख्यमंत्री अमृत योजना, किशोरी बालिका योजना, मुख्यमंत्री बाल सन्दर्भ योजना, प्रधानमंत्री मातृवंदन योजना के साथ-साथ महतारी जतन योजना, रेडी टू इट आदि संचालित है |

अरस्तू ने साथ ही कहा है की शरीर ही स्वस्थ्य मष्तिष्क का निवास होता है | अर्थात बच्चों के सीखने सिखाने के साथ उनके स्वास्थ्य का सकारात्मक संबंध होना है | छ.ग. शासन की उपरोक्त योजनाओं के बावजूद छ.ग. के प्राथमिक शाला के बच्चों में कुपोषण की समस्या बनी हुई है जो की उनके सीखने सिखाने में बाधक है| इस रूप में यह एक गंभीर समस्या है | जिस पर विद्यालय नेतृत्व का समाधान हेतु त्वरित पहल करने की जरुरत है |

प्राथमिक शाला:- प्राथमिक शाला से आशय कक्षा 01 से 05, आयु 06 से 11 वर्ष तक है | औपचारिक रूप में बच्चों के सीखने की शुरुआत यहीं से होती है | यदि सीखने की शुरुआत ठीक से हो, आगे की कक्षाओं में ज्यादा कठिनाई नहीं होगी |

कुपोषण:- जब किसी व्यक्ति के आहार में पोषक तत्वों का सही मात्रा नहीं होती है तब कुपोषण की स्थिति निर्मित होती है | अर्थात उम्र एवं शारीरिक कद काठी के अनुरूप संतुलित रूप में प्रोटीन वसा कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, फाइबर और जल की संतुलित मात्रा नहीं मिलने के कारण व्यक्ति कुपोषण का शिकार होता है | यहाँ ध्यान देने की बात यह भी है की उपरोक्त चीजों को अत्यधिक मात्रा में लेने से भी स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है जिसे अतिपोषण कहा जाता है | यह स्थिति भी कुपोषण की तरह खतरनाक होती है |

विद्यालय नेतृत्व :- विद्यालय नेतृत्व से आशय विद्यालय प्रमुख से है जिनके नेतृत्व या मार्गदर्शन में विद्यालय उपरोक्त प्रगति की और बढ़ता है | चूँकि विद्यालय के केंद्र बिंदु में बच्चे होते है और विद्यालय के हितग्राही शिक्षक, एस.एम.सी., पालक आम जनता एवं शासकीय कार्यालय भी होते है | अतः विद्यालय प्रमुख के इन सभी का नेतृत्व करना होता है जिसे हम साझेदारी का नेतृत्व भी कहते है|

उद्देश्य :- इस मोड्यूल के माध्यम से विद्यालय प्रमुख निम्नांकित बातों पर समझ विकसित कर सकेंगे -

- यह जान सकेंगे की सीखने सिखाने का संबंध बच्चों के स्वास्थ्य से है |
- कुपोषण के कारणों को जान सकेंगे |
- कुपोषण के निवारण हेतु स्वपहल कर सकेंगे |

मुख्य विषय:- आज के बच्चे ही कल के नागरिक होंगे अगर देश की प्रगति, सुरक्षा एवं संरक्षण का दायित्व इनके ही कन्धों पर होगा | ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है की हम अपने भविष्य को कैसे सुरक्षित रखें | बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप स्तर पर स्वस्थ व मजबूत बनें यह हम सभी चाहते है, लेकिन वास्तविक यह है की पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों के कुपोषण को दूर करने के लिये तमाम प्रयासों के बावजूद प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों में कुपोषण की समस्या बनी हुई है | सवाल यह है की क्या इस समस्या के रहते हुए बच्चों के अपेक्षित दक्षता को कैसे प्राप्त की जा सकती है ? अपेक्षिक दक्षता के बिना देश की प्रगति और सुरक्षा जैसे उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकेंगे ?

कुपोषण पर यदि गहराई से विचार किया जाये तो भोजन में पोषक तत्वों तथा वसा, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन आदि कारक नहीं है, अपितु इसके और भी कई कारक हैं जो निम्नांकित है -

1. अशिक्षा
2. गरीबी
3. अज्ञानता
4. शैक्षिक भेदभाव
5. कम उम्र में माँ बन जाना

6. दो बच्चों के जन्म के बीच पर्याप्त अंतर न होना
7. पर्याप्त स्तनपान का आभाव
8. पोषक आहार की कमी
9. अस्वच्क्षता
10. धार्मिक मान्यताएं
11. पाचन विकार

एक विद्यालय प्रमुख होने के नाते कुपोषण के कारणो व पड़ने वाले दुष्परिणाम/प्रभाव को जानना समझना व निदान आवश्यक है |

तो आइये कुपोषण के दुष्परिणाम पर एक नजर डालते है-

बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक विकास ठीक नहीं हो पाता है |

मानसिक विकास प्रभावित होने के कारण बच्चों के सोचने समझने की क्षमता कमजोर हो जाती है तथा उसमे सीखने व याद रखने की क्षमता अन्य बच्चों के मुताबिक कम हो जाती है | इसके परिणाम स्वरुप बच्चे हिन भावना से ग्रसित हो जाते है |

बच्चों की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है जिससे कुपोषित बच्चे संक्रमण की चपेट में आसानी से आ जाते है |

ऐसे बच्चे अंधत्व, रतौंधी जैसे सुखा रोग का शिकार हो जाते है |

उपरोक्त परिस्थितिवश बच्चे अपने साथी व शिक्षक की नजर में उपेक्षित हो जाते है | फलस्वरूप उनमे सीखने सिखाने की प्रक्रिया बाधित हो जाती है | **"ऐसी स्थिति में एक विद्यालय प्रमुख होने के नाते आपकी क्या भूमिका होंगी? आप क्या पहल करेंगे"**

पहल:-
1.
2.
3.
4.
5.

जिला धमतरी छत्तीसगढ़ के विद्यालय प्रमुख के पहल (केस स्टडी)

केस स्टडी 1 - शासकीय उन्यन प्राथमिक शाला भटगांव जो की एक पिछड़ी जनजाति "देवार" घुमंतू समुदाय के बीच में स्थित है| जहाँ पर बच्चों के स्वास्थ्य कुपोषण, स्वच्छता, स्कूल में ठहराव एक बड़ी चुनौती है | ऐसे स्थिति में वहाँ के प्रभारी प्रधानपाठक श्री दिनेश पांडे एवं उनके साथियों ने मिलकर उक्त चुनौतियों के समाधान के क्षेत्र में पालक एवं समुदाय के साथ मिलकर अनुकरणीय पहल किये हैं| जिसके अंतर्गत उन्होंने पालक एवं समुदाय के साथ मिलकर स्वास्थ्य एवं स्वच्क्ष्ता पर एक जागरूकता अभियान चलाया | साथ ही विद्यालय एवं समुदाय के किये विद्यालय परिसर में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया|

इसमें कुपोषित बच्चों के चिन्हांकित कर प्रथम चरण के प्रधान पाठक एवं शिक्षकों ने 1-1 कुपोषित बच्चों को गोद लिया फिर गाँव के संपन्न किसान एवं व्यवसायियों को इस अभियान में जोड़कर 1-1 कुपोषित बच्चों को गोद लेने के लिए लिए प्रेरित किये|

दुसरे चरण में कुपोषण से मुक्त करने के लिए पोषण आहार जैसे दूध, फल, दलिया तथा दवाइयां आदि उपलब्ध कराये | साथ ही जन सहयोग से शासकीय मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता में सुधार किया गया |

चूँकि ये बच्चे घुमंतू एवं भिक्षावृत्ति के लिप्त थे जिसके कारण वे गंदे मैले कपड़े पहनकर स्कूल आते थे | फलस्वरूप विद्यालय का वातावरण सीखने सिखाने के अनुकूल नहीं था | विद्यालय प्रमुख एवं उनकी टीम के लिए यह एक गंभीर चुनौती थी| इस चुनौती को स्वीकार करते हुए स्कूल की टीम ने वहन जन सहयोग से ट्यूब वेल व मोटर पम्प की व्यवस्था किया | समय पूर्व बच्चों के विद्यालय बुलाकर साबुन से नहलाया जाता था एवं गंदे कपड़ों को साबुन से धुलवाकर सुखाया जाता था | तेल कंघी की व्यवस्था भी की गयी है| जिसके पश्चात् शिक्षकों के द्वारा स्कूल गणवेश को विद्यालय में पहनाया जाता है और प्रार्थना पश्चात् अच्छे वातावरण में सीखने सिखाने की प्रक्रिया शुरू होती है | यही प्रक्रिया प्रतिदिन अपनाई जाती है| परिणामस्वरूप पालकों में जागरूकता, शिक्षा में रूचि, विद्यालय से जुड़ाव, शतप्रतिशत नामांकन व ठहराव के साथ शैक्षिक गुणवत्ता सुनिश्चित हुई है | विद्यालय का यह अनोखा पहल छत्तीसगढ़ के लिए बना मिसाल |

इसी तरह धमतरी जिले के ही नवीन प्राथमिक शाला चर्रा जो की घुमंतू पारधी विशेष पिछड़ी जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में स्थित है जहाँ कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाए संचालित है | जिसमें 5 बच्चे कुपोषित थे | विद्यालय प्रमुख- दामिनी, किरण साहू, और शिक्षक देवनाथ साहू ने मिलकर इस कुपोषित बच्चों के गोद लिया | इनका स्वास्थ्य परिक्षण कराकर डाईट चार्ट

अनुसार विटामिन व प्रोटीन युक्त पोषण आहार के साथ ही फल एवं भोजन उपलब्ध कराया | 7-9 माह के समन प्रयास से आज बच्चें कुपोषण से मुक्त है और सीखने सिखाने का स्तर बढ़ा है | बच्चों में आत्म विश्वास भी प्रबल हुआ है |

केस स्टडी II - (दृढ़ संकल्प, साझी रणनीति , साझा प्रयास से हुआ चमत्कार) प्राथमिक शाला जांगरटोला में एस.एम.सी. बैठक में प्रधान पाठक ने जानकारी दी की लगभग दो सप्ताह से कक्षा 1 की 02 छात्राएं, कक्षा 2 की 03 छात्राएं एवं कक्षा 5 के 5 छात्र लगातार अनुपस्थित है| प्रधान पाठक द्वारा पूछताछ एवं चर्चा परिचर्चा कर इन छात्र- छात्राओं के बारे में जानकारी ली गयी | प्राप्त जानकारी के आधार पर ये सभी बच्चे किसी न किसी रूप से कुपोषण के शिकार थे | बैठक में इन कक्षाओं के सम्बंधित शिक्षकों में यह भी जानकारी दी की ये सभी बच्चें कक्षा में उदास बैठे रहते थे|

उनका ध्यान पढाई पर नहीं रहता | प्रधान पाठक ने गंभीर समस्या पर संज्ञान लेते हुए कुपोषण निवारण हेतु त्वरित पहल की-

1. पालकों की सहमति एवं उपस्थिति में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया | शिविर में आवश्यक दवाई का वितरण कराया गया | सभी 10 बच्चे का हेल्थ कार्ड बनाया गया बच्चों के पलकों को स्वास्थ्य विभाग की और से भोजन चार्ट प्रदान किया गया |
2. ग्राम पंचायत की बैठक में कुपोषण निवारण की एक एजेंडे के रूप में शामिल कराकर उस पर चर्चा परिचर्चा करे गई | गाँव में कोटवार द्वारा मुनादी कराई गई | वार्ड पंचो को इन बच्चों के कुपोषण निवारण हेतु जिम्मेदारी दी गई | महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता एवं मितानिन को सतत निगरानी हेतु संयुक्त जिम्मेदारी दी गयी| ग्राम पंचायत द्वारा यह भी निर्णय लिया गया की ग्राम पंचायत के आगामी माह की बैठकों में कुपोषण एक स्थायी एजेंडा के रूप में शामिल होगा जिसमे विगत माह में किये गये प्रयास और प्रगति की समीक्षा कर आगे की रणनीति का निर्माण किया जायेगा |

Figure 1 ग्राम पंचायत बैठक

3. प्रधान पाठक द्वारा विद्यालय के शिक्षकों के साथ कुपोषण का सीखने पर दुष्प्रभाव पर चर्चा परिचर्चा की गयी | सभी शिक्षक एक मतेन इस

बात पर सहमत हुए की बच्चों को कुछ माह में कुपोषण से मुक्त कराकर ही दम लेंगे | प्रधान पाठक सहित अन्य चार शिक्षकों ने 2-2 बच्चों को गोद लेकर कुपोषण निवारण का बीड़ा उठाया |

4. कुपोषण प्रभावित बच्चों के माता-पिता के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विद्यालय में किया गया | इस कार्यशाला में स्थानीय डॉक्टर को उद्बोधन के लिए आमंत्रित किया गया | महिला एवं बल विकास विभाग द्वारा कुपोषण पर विडिओ दिखाया गया | पालकों से सवाल जवाब भी किये गए | उपस्थित सभी पालकों ने कुपोषण दूर करने का संकल्प लिया |
5. शिक्षकों में घर घर जाकर पालकों से स्वच्क्षता, साफ़ सफाई एवं डॉक्टर्स द्वारा दिए गए भोजन चार्ट के अनुरूप भोजन उपलब्धता पर चर्चा की| पालकों का उत्साह वर्धन किया गया |
6. प्रधान पाठक द्वारा समाजसेवी, दानदाताओं से मिलकर पूरक पोषक आहार की व्यवस्था की गई| इन्हें विद्यालय में बुलाकर दूध, फल, औषधि एवं अन्य खाद्य पदार्थों का वितरण कराया गया| समाचार पत्रों में इसका प्रकाशन भी कराया गया जिससे दुसरे लोग भी प्रेरित हों |

7. दो कपड़ा व्यवसायी एवं दो किराना व्यवसायी से कुपोषित बच्चों के लिए जुटे कपड़े, गुड़, फल्ली, दूध पाउडर एवं दलीय का इंतजाम किया गया | इन सामग्री का वितरक पालकों को किया गया |
8. ग्राम पंचायत द्वारा पुरे वर्ष भर के लिए हैण्ड वाश एवं टॉयलेट की साफ सफाई के लिए सामग्री भी व्यवस्था की गई |
9. आंगनबाड़ी के तर्ज पर हर सप्ताह सुपोषण अभियान मनाया गया | स्वास्थ्य परिक्षण कर प्रोग्रेस रिपोर्ट तैयार किया गया | इस अभियान में प्रत्येक सप्ताह सामाजिक कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी, दानदाताओं द्वारा खाद्य पदार्थों का वितरण भी किया गया |
10. प्रधान पाठक ने शिक्षकों को स्पष्ट निर्देश दिया की वे इन कुपोषित बच्चों से सहृदयता पूर्वक व्यव्हार करें| विद्यालय में शिक्षकों ने बच्चों के साथ सहृदयता पूर्वक व्यव्हार किया |
11. शिक्षकों के द्वारा मध्यान्ह भोजन के समक्ष कुपोषित बच्चों की सतत निगरानी कर पर्याप्त भोजन मुहैया कराया गया | विद्यालय के रसोइयों को भी सतत साफ सफाई का निर्देश दिया गया |
12. बच्चों को सुपोषित करने के लिए शिक्षकों ने मोहल्ले की जागरूक महिलाओं को अपने टीम में शामिल किया | स्थानीय महिलाओं ने कुपोषित बच्चों को गोद लेने की परंपरा की शुरुआत की|

परिणाम :- समन्वित एवं साझी रणनीति के तहत दो माह में इन कुपोषित 10 बच्चों को कुपोषण से मुक्त करा लिया गया| इस पूरी योजना का नेतृत्व जांगरटोला के प्रधान पाठक ने किया जिन्हें हर वर्ग का समर्थन मिला|

आइये इन प्रश्नों के जवाब ढूंढे :-

1. क्या अपने अपने विद्यालय के कुपोषित बच्चों की पहचान की है? यदि आपने पहचान कर ली तो आप क्या क्या पहल करेंगे |
2. प्रधान पाठक ने कुपोषण निवारण पर सफलता किस तरह से प्राप्त की ?
3. यदि आप जांगरटोला के प्रधान पाठक होते तो किस किस तरह के प्रयास करते ?

निष्कर्ष:-

विद्यालय प्रगतिशील समाज का बहुआयामी केंद्र बिंदु है | हर माता पिता अपने बच्चों को आगे बढ़ाने में, तरक्की के रास्ते पर ले जाने में है | वैसे विद्यालय के केंद्र में तो बच्चे होते है पर विद्यालयीन गतिविधियों के क्रियान्वयन की सारी जिम्मेदारी प्रधान पाठक पर होती है | यदि प्रधान पाठक संवेदनशील है तो वह विद्यालय में उपस्थित किसी भी समस्या का समाधान करने में सफल हो सकता है | प्रधान पाठक का कुशल नेतृत्व ही किसी विद्यालय के समस्याओं से मुक्त करा सकता है |

हमारे समाज में कई तरह के लोग रहते है | गरीबी, अज्ञानता, एवं अन्यान्य कारणों से आज भी हमारे समाज में कुपोषण की भयावह समस्या बनी हुई है | हमारा विद्यालय भी इससे अछूता नहीं है, यदि विद्यालय में कुपोषण की समस्या है तो यह प्रधान पाठक के लिए बहुत बड़ी चुनौती है | कुपोषण न केवल शारीरिक वृद्धि को प्राभावित करता है अपितु बच्चों के सीखने सिखाने को भी प्रभावित करता है | कुपोषित बच्चे का व्यव्हार भी विद्यालय में असहज हो जाता है | प्रतिक्रिया स्वरुप कुपोषित बच्चे के साथ कक्षा के बच्चे तथा शिक्षक का व्यव्हार भी नकारात्मक हो जाता है | यह बच्चे तथा विद्यालय क्षेत्रों के लिए घटक है | ऐसे बच्चों के साथ सहृदयता एवं संवेदनशीलता के साथ व्यव्हार करने की आवश्यकता है |

विद्यालय की स्थापना वास्तव में एक सामुदायिक शिक्षा केंद्र के रूप में की गयी है | इस अर्थ में कुपोषण की समस्या केवल विद्यालय की नहीं है अपितु यह पुरे समाज की सार्वजानिक समस्या है और इसका समाधान भी मिल जुलकर ही किया जा सकता है | प्राथमिक विद्यालय भरगाँव, चर्रा या जांगरटोला के प्रधान पाठकों ने जो सफलता प्राप्त की उसके समाज सेवी, जनप्रतिनिधि, व्यापारी, पंचायत, सरकारी कर्मचारी का अमूल्य योगदान रहा है | यह एक उदाहरण

मात्र है | जरुरी नहीं की अन्य विद्यालय में कुपोषण की समस्या का निवारण बिलकुल इन्ही विद्यालयों की तरह हो | विद्यालय की परिस्थिति के अनुरूप रणनीति अलग हो सकती है, तरीके अलग हो सकते है | हाँ यह सत्य है की, न हारने वाली कोशिश ईमानदारी से की जाये तो कुपोषण जैसी गंभीर समस्या का समाधान अवश्य किया जा सकता है |

सन्दर्भ :-

1. राष्ट्रिय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005
2. राष्ट्रिय शिक्षण निति 2020
3. विविध दैनिक समाचार पत्र

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **बच्चा कुपोषण का शिकार तब होता है जब -**
    A - उसे संतुलित मात्रा में आहार नहीं मिलता
    B - उसे अत्यधिक मात्रा में आहार मिलता है
    C - उसे पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता
    D - उपरोक्त सभी
2. **कुपोषित बच्चे की पहचान हेतु सटीक लक्षण है -**
    A - आयु एवं ऊंचाई के अनुसार वजन न होना
    B - खेलने में उसका मन न लगना
    C - कक्षा में चिडचिडापन होना
    D - सबसे अलग-थलग रहना
3. **विद्यालय में कुपोषित बच्चे की समस्या है -**
    A - पारिवारिक
    B - विद्यालयीन
    C - सामाजिक
    D - उपरोक्त सभी
4. **कुपोषित बच्चे के सुपोषित करने हेतु सबसे कारगर तरीका है -**
    A - उसे घर में पर्याप्त पोषण आहार दिया जाए
    B - विद्यालय में पर्याप्त पोषक तत्व दिया जाए
    C - समय समय पर स्वास्थ्य की जाँच की जाये
    D - उपरोक्त सभी
5. **बच्चे की वास्तविक आयु के अनुसार यदि बच्चे की मानसिक आयु का विकास नहीं हुआ है तो इसे हम कह सकते है -**
    A - बच्चा मंद बुद्धि का है
    B - कुपोषण के कारण बच्चे का मानसिक विकास नहीं हुआ है|
    C - अनुवांशिक रोग है
    D - पागलपन
6. **विद्यालय में कुपोषित बच्चे की पहचान करने के बाद प्रधान पाठक को चाहिए की वह -**
    A - पालकों को सुचना दें
    B - स्वास्थ्य विभाग को सुचना दे

C - एस.एम.सी. एवं ग्राम पंचायत को सुचना दे

D - उपरोक्त सभी से संपर्क कर उचित पहल करें

7. विद्यालय में कुपोषण निवारण हेतु पहल करने की सर्वप्रथम जिम्मेदारी है -

A - महिला एवं बाल विकास की

B - स्वास्थ्य विभाग की

C - पंचायत विभाग की

D - शिक्षा विभाग की

माड्यूल आलेख

श्री के.के. साहू

(व्याख्याता)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर

श्री लक्ष्मण राव मगर

(सहायक संचालक)

जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, धमतरी

श्री बी.पी.चन्द्रा

(उप प्राचार्य)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगरी

छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्व माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को पूर्व व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ने में विद्यालय नेतृत्व भूमिका

विचारणीय तथ्य

पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शिक्षा पूर्ण कर लेने के बाद और कौन-कौन सी व्यावसायिक योग्यताओं की जानकारी होनी चाहिए ?

प्रस्तुत मॉड्यूल के माध्यम से विद्यालय प्रमुख अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को विषयगत अध्ययन के साथ-साथ पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में आवश्यक मार्गदर्शन व संचेतना उत्पन्न कर सकेंगे इसके अलावा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों से सम्बन्धित कौशलों तथा तकनीकी ज्ञान को विभिन्न व्यवसाय से जोड़कर बता सकेंगे। इस मॉड्यूल के द्धारा विद्यालय प्रमुखों में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में समझ भी बनेगी और वे इस विषय पर ज्यादा से ज्यादा जानकारी जुटा कर अपने विद्यार्थियों को बता सकेंगे। विद्यार्थियों को भी अपनी क्षमता और दक्षता के अनुसार व्यवसाय का चयन करने में मदद मिल सकेगी इसके अतिरिक्त विद्यार्थी व्यावसायिक शिक्षा के बारे में जानकर केवल विषयगत योग्यता के बारे में न सोचकर अन्य क्षेत्रों में भी अपने रोजगार के बारे में चिंतन कर सकेंगे।

प्रस्तावना

पूर्व में गठित विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में व्यावसायिक शिक्षा पर निम्नांकित बातों पर जोर दिया गया है -

शिक्षा आयोग 1964-66 में व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित कार्यात्मक साक्षरता पर बल दिया गया।

1968 में उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की शुरूवात की गयी।

1986 में व्यावसायिक शिक्षा को एक विस्तृत एवं व्यवस्थित कार्यक्रम के रूप में चलाये जाने पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रत्येक बच्चे को कम से कम एक व्यवसाय सिखाया जायेगा। कक्षा 6-8 के लिए राज्यों और स्थानीय समुदाय द्वारा तय किए गये महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प जैसे बढ़ईगीरी,बिजली का काम,धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तन बनाने आदि से सम्बन्धित जानकारी प्रदान की जावेगी।

वर्ष 2025 तक स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखा गया है।

स्थानीय व्यावसायिक विशेषज्ञों जैसे बढ़ई, माली, कुम्हार ,कलाकार आदि के साथ 6-8 की पढ़ाई के दौरान 10 दिवस का बैगलेस पीरियड मतलब इन्टर्नशिप भी दी जावेगी। शिक्षा विभाग पर छात्र रूपी मानव संसाधन को समाज एवं उद्योग के लिए उपयोगी बनने की बड़ी जिम्मेदारी है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली का पूरा जोर उपाधि या प्रमाणपत्र पर रहता है न कि छात्र को समाज एवं उद्योग के लिए उपयोगी मानव संसाधन बनाने पर। परिणामस्वरूप स्कूलो से निकलने वाला युवा वर्ग प्रायः उद्योग की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरते उन्हें उद्योगों और समाज के जरूरतों के मुताबिक काम करने के काबिल बनने में समय लगता है। आज शिक्षा व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि कैसे शिक्षा में परिर्वतन लाए जाएं जो ज्ञान और कार्य के बीच सेतु बनाने का कार्य करें तथा जो श्रम के प्रति विश्वास एवं सम्मान उत्पन्न करने में सक्षम हो। स्कूली शिक्षा व्यवस्था को इन सभी पहलुओं के उपाय खोजने होंगे बच्चों को शुरू से ही लक्ष्य निर्धारण हेतु प्रेरित करना होगा। यह कवायद प्रारंभिक शालाओं से शुरू हो सकती है। बच्चों को भावी जीवन के बारे में सपने संजोना सिखाना पड़ेगा और उनमें जीवन से जुड़ी सामाजिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कार्य के महत्व को समझाना और कुछ बनने की ललक पैदा करनी होगी। पूर्व माध्यमिक विद्यालय में पहुंचने पर बच्चों को कॅरियर मार्गदर्शन दिया जायेगा। इस हेतु ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जायेगा जिसमें आज के जगत में उपलब्ध विभिन्न व्यवसायों का विवरण हो। इन सभी व्यवसायों ,कार्यो के लिए किन किन विषयों में पारंगत होना आवश्यक है उन विषयों में पारंगत होने के लिए किस दिशा में कितनी मेहनत करनी होगी यह सब बातें बतायी जायेगी अर्थात् बच्चों को दूरगामी लक्ष्य निर्धारण के बारे में सोचने का मौका दिया जायेगा ताकि उन्हें तैयारी का भरपूर समय मिले तथा वे उद्देश्यहीन पढ़ाई से जुड़े न रहें , पढ़ाई लिखाई में सार्थकता दिखे। बदलते सामाजिक तथा आर्थिक परिदृश्य में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा को ऐसी दिशा देनी होगी जिससे छात्रों में आधारभूत कौशल,सूचना कौशल,सम्प्रेषण कौशल, अन्तर्व्यक्ति कौशल उद्यम कौशल एवं मूल्यो का विकास हो जिससे बच्चों को बदलते कार्य एवं रोजगार की आवश्यकताओं के साथ तालमेल बैठाना आ जाए।

संकेत शब्द

छत्तीसगढ़ राज्य, पूर्व माध्यमिक शाला, पूर्व व्यावसायिक शिक्षा, विद्यालय नेतृत्व, विषय आधारित कौशल

उद्देश्य

इस मॉड्यूल द्वारा प्रधान अध्यापक

1. पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में जागरूकता उत्पन्न कर सकेंगे।
2. पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में पूर्वव्यावसायिक शिक्षा हेतु वातावरण का निर्माण कर सकेंगे।
3. पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के दृष्टिकोण से रूपांतरित कर सकेंगे।
4. पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को रूचि एवं अभिक्षमतानुसार रोजगार चयन में मार्गदर्शन प्रदान कर सकेंगे।

शिक्षण सामग्री :- Trillion Dollar Coach Book – Bill Campbell 🕮 slide show

https://www.slideshare.net/ericschmidt/trillion-dollar-coach-book-bill-campbell

इस स्लाइड शो को देखने के बाद आप अपने आप को एक नेतृत्वकर्ता के रूप में कैसे देख पाते है ? चिंतन करें ।

विद्यालय प्रमुखों के लिए आत्मसात् करने वाली प्रमुख बातें

- विद्यालय प्रमुख विद्यालयों में परिवर्तन करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- यदि विद्यालय प्रमुख विद्यार्थियों की शिक्षा से गहराई से जुड़ते हैं तो निश्चित ही वे विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूपांतरित कर सकते हैं।
- विद्यालय रूपांतरण हेतु संचालन क्षमता की बजाय नेतृत्व क्षमता के विकास की आवश्यकता है।
- विद्यालय रूपांतरण की प्रकिया एक दीर्घकालीन तथा निरंतर भागीदारी से जुड़ी हुई प्रक्रिया है जिसमें निरंतर नेतृत्व प्रदान करने की भावना के साथ-साथ प्रेरित करना, नवीन ज्ञान कौशलों का विकास करना, सीखने का अवसर उपलब्ध कराना तथा वातावरण निर्मित करना तथा सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना, उद्देश्यो की पहचान करना,बाधाओं को दूर करना,विकल्प तलाशना,योजना का निर्माण करना तथा योजना का निर्माण करना शामिल है।

पूर्व व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन के अनुसार व्यावसायिक शिक्षा वह शिक्षा है जो शैक्षिक प्रक्रिया के सभी रूप और स्तर में सामान्य ज्ञान के अलावा आर्थिक और सामाजिक जीवन के

विभिन्न क्षेत्रों में व्यवसायों,प्रौद्योगिकियों और विज्ञान से सम्बधित ज्ञान दृष्टिकोण और समझ का अध्ययन एवं व्यावहारिक कौशल का अधिग्रहण करने में मदद करती है।

यूनेस्को 1974 के अनुसार व्यवसायिक शिक्षा में सामान्य शिक्षा के साथ- साथ तकनीकी शिक्षा तथा उससे सम्बन्धित विज्ञान, हस्तकौशल आचार व्यवहार तथा सामाजिक एवं आर्थिक जीवन से जुड़े अनेक प्रकार के व्यवसायों का ज्ञान सम्मिलित है। यह रोजगारोन्मुखी विशिष्ट ज्ञान तथा उपयोगी दक्षताओं और प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वरोजगार का मार्ग दिखाती है। छत्तीसगढ़ राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है आज भी लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित है आने वाले समय में बाजार श्रम प्रधान के बजाय तकनीकी और कौशल आधारित होगा जिससे व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आवश्यक हो जायेगी इस बिन्दु को नई शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिकता दी गई है।

अध्ययन सामग्री :- https://www.slideshare.net/NISHTHA_NCERT123/module-15-prevocational-education-186233902 📖 slide show

अध्ययन सामग्री :- पूर्व व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा - https://youtu.be/ARRMyVKNiTQ

उपरोक्त स्लाइड प्रदर्शन तथा अध्ययन सामग्री को समझकर विद्यालय प्रमुख में व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा की समझ और स्पष्ट हो सकेगी।

अध्ययन सामग्री :- पूर्व व्यावसायिक शिक्षा एक परिचय-मॉड्यूल क्रमांक 16

विद्यालयों में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु वातावरण का निर्माण करना

पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु आप अपने विद्यालय में वातावरण का निर्माण कुछ इस तरह कर सकते हैं -

अध्ययन सामग्री :- https://youtu.be/McWdxiRowHk छत्तीसगढ़ के हस्तशिल्प/बस्तर आर्ट/पीतल/रेशम/माटी कला

- स्थानीय स्तर पर व्यवसायिक मड़ई का आयोजन करके विद्यार्थियों के विभिन्न व्यवसाय के सम्बन्ध में जानकारियां दे सकते हैं।
- बच्चे अपने आस पास में व्यावसायिक कार्यो के बारे में जानकारी अपने सम्बन्धियों से आसानी से जुटा सकते हैं।
- विद्यालयों में प्रिंट रीच का वातावरण तैयार कर व्यावसायिक कार्यो की जानकारी दे सकते है।
- विद्यालय में व्यावसायिक गतिविधियों /क्रियाकलापों का आयोजन कर सकते हैं।
- बाल व्यावसायिक सभा का गठन कर विद्यार्थियों को व्यावसायिक दायित्वों, कौशलों,दक्षताओं के सम्बन्ध में जानकारी दे सकते हैं।

- व्यावसायिक व्यक्तियों को अनुभव शेयरिंग हेतु आमंत्रित कर सकते हैं। स्थानीय स्तर पर विभिन्न व्यवसायों की जानकारी देने हेतु कुछ स्थानीय स्तर पर लोगों से सम्पर्क कर जैसे बढ़ई, लोहार, दर्जी, नाई, लोक कलाकार, मूर्तिकार, खपरा और ईंट बनाने वाले, होटल व्यवसाय से जुड़े लोगों से सीखने का अवसर देने छुट्टियों के दौरान दस दिन का बैगलेस स्कूल की अवधारणा को स्पष्ट किया जा सकता है।
- विद्यालय की दीवारों पर विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की जानकारी किस व्यवसाय को चुनने के लिए क्या पढ़ना होगा जैसी जानकारी से विद्यार्थियों को अवगत करा सकते हैं।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण

इस उप शीर्षक के माध्यम से नेतृत्वकर्ता कक्षाकक्ष में संचालित सामान्य शैक्षणिक विषयों के साथ साथ व्यावसायिक कौशल आधारित शिक्षण अधिगम प्रकिया को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ सकेंगे।

यह व्यावसायिक शिक्षा बच्चों को काम की दुनिया में विभिन्न उत्पादक कार्यो के लिए बुनियादी कौशल आवश्यकताओं के अन्वेषण करने में उपयोगी होगी। इस तरह कार्य आधारित गतिविधियों के पीछे अन्तर्निहित विचार उन्हें कक्षा 6-8 तक की शिक्षा में उपलब्ध योजना के अतिरिक्त बोझ के बजाय शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के एक अभिन्न अंग के रूप में बनाना है। यह न केवल पुस्तकीय ज्ञान और सैद्धांतिक ज्ञान के मध्य की सीमाओं को कम करेगा,वरन् बच्चों के कार्य क्षेत्रों में कौशल की आवश्यकताओं को भी उजागर करेगा। इस प्रकार उन्हें भविष्य में कॅरियर का रास्ता तय करने में सहायता मिलेगा। भाषा ,गणित,विज्ञान कला,संगीत और कार्यानुभव के शिक्षक उन विषयों से संम्बन्धित कौशल आधारित गतिविधियों को कराने में शामिल होंगे जिन्हें वे पढ़ा रहें हैं।

शिक्षण अधिगम पद्धति अवलोकन और अभ्यास पर आधारित हो सकती है। ये शिक्षक गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रयोग करेंगे इस प्रशिक्षण में सीखना,समस्या समाधान, सहकारी या टीम आधारित परियोजना, अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की आवश्यकता का पाठ इत्यादि आते हैं। परियोजना कार्य कई क्षेत्रों से सम्बन्धित ज्ञान और कौशल को व्यक्त करते है। विद्यार्थी भविष्य के रोजगार से सम्भावित क्षेत्रों से सम्बन्धित व्यावहारिक ज्ञान और कौशल के लिए संगठनों का दौरा कर सकते है। विभिन्न व्यवसायों में लगे व्यक्तियों से भी सम्पर्क कर सकते है।कौशल के माध्यम से बच्चे व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर क्रियाशील बनने के लिए स्वभाव,दृष्टिकोण और सामाजिक क्षमताओं का विकास करेंगे। व्यावसायिक कौशल घटकों के लिए,सामान्य शिक्षा विषयों के पाठ्यक्रम में दिए गये विषयों पर आधारित गतिविधियों को पाठ्यक्रम के भाग के रूप में आयोजित किया जायेगा।

विद्यालय प्रमुख व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु नीचे दिए गये वीडियो को देख कर अपनी गहरी समझ बना सकेंगे।

अध्ययन सामग्री :- https://youtu.be/tYARqEp0Nbg - VIGYAN ASHRAM – DEVELOPMENT THROUGH

संसाधन उपलब्ध कराना

विभिन्न व्यवसायों की सूची।

विद्यालय में कॅरियर एण्ड गाइडेंस प्रकोष्ठ में उपलब्ध विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित पुस्तकें।

इन्टरनेट युक्त कम्प्यूटर सेट

मानव संसाधन - विभिन्न व्यवसाय से सम्बन्धित स्त्रोत व्यक्ति

क्रियाकलाप/गतिविधियों का आयोजन

गतिविधि क्रमांक 1 - मैं कौन हूँ ?

इस गतिविधि के माध्यम से विद्यालय प्रमुख विभिन्न व्यवसाय में कार्य करने वाले लोगों तथा उनके द्वारा किए गये कार्यो के बारे में जान सकेंगे।

प्रक्रिया

शिक्षक कक्षा कक्ष में बच्चों के समक्ष विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित कुछ नाम श्यामपट पर अंकित करेंगे। जैसे - राजमिस्त्री, बढ़ई, प्लम्बर, घरेलू उपकरणों के तकनीशियन,माली,ब्यूटीशियन,मैकेनिक आदि

कक्षा के बच्चे अलग अलग व्यवसायों में व्यक्तियों द्वारा किए गये कार्यो को लिखेंगे। एक बच्चा किसी एक व्यवसाय से सम्बन्धित कार्यो को लिखेगा।

कक्षा का एक बच्चा आगे आयेगा और एक कुशल व्यक्ति द्वारा किए जाने कार्यो को सभी बच्चों को बतायेगा।

कक्षा के अन्य सभी बच्चे व्यवसाय के बारे में अनुमान लगायेंगे। प्रत्येक सही अनुमान के लिए अंक दिए जायेंगे।

इसी प्रक्रिया को बारी बारी से अन्य बच्चे भी करेंगे और खेल को जारी रखेंगे।

गतिविधि क्रमांक 2

विभिन्न व्यवसायों की जानकारी स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा देना

प्रक्रिया

विद्यालय के बच्चों को विभिन्न व्यावसायिक कौशलों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने हेतु विद्यालय के आस पास रहने वाले विभिन्न व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्तियों की सूची तैयार की जायेगी।

प्रत्येक सप्ताह में एक दिन किसी व्यवसाय विशेष से सम्बन्धित व्यक्ति को विद्यालय में आमंत्रित किया जायेगा। सम्बन्धित स्त्रोत व्यक्ति द्वारा बच्चों के सामने अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की जायेगी। बच्चों को स्त्रोत व्यक्ति से उनके व्यवसाय के सम्बन्ध में प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान किया जायेगा।

बच्चे महत्वपूर्ण जानकारियों को अपने नोट बुक में लिखेंगे ।

इस प्रक्रिया को प्रत्येक सप्ताह अलग अलग व्यववयाय से सम्बन्धित स्त्रोत व्यक्तियों द्वारा सम्पादित की जावेगी। इस प्रकार छात्रों के पास विभिन्न व्यवसाय से सम्बन्धित अनेकों जानकारियों का संकलन हो सकेगा।

गतिविधि क्रमांक 3

विद्यालय में कॅरियर गाइडेंस प्रकोष्ठ की स्थापना

विद्यालय में किसी निश्चित स्थान पर कॅरियर गाइडेंस प्रकोष्ठ की स्थापना की जायेगी जिसके लिए आवश्यक व्यावसायिक पुस्तकों की व्यवस्था करने के लिए जनसहयोग लिया जायेगा।

विद्यालय के प्रत्येक छात्र को जिम्मेदारी दी जायेगी कि वे अपने घर या पड़ोस से व्यावसायिक पुस्तकों का संकलन कर विद्यालय में लायेंगे तथा विद्यालय के पुस्तकालय से ऐसे पुस्तकों को लाकर प्रकोष्ठ में रखा जायेगा। कुछ पुस्तकों की व्यवस्था जन सहयोग से भी की जा सकेगी। यह व्यवस्था उच्च कार्यालय या अन्य संस्थानों के सहयोग से भी की जा सकेगी।

विद्यालय के बच्चे कॅरियर गाइडेंस प्रकोष्ठ में उपलब्ध पुस्तकों के द्वारा विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

अध्ययन सामग्री :- SKILL DEVELOPMENT AND PRE VOCATIONAL TRAINING AT DCCW - https://youtu.be/EZ-FlduY2-k

सामान्यीकरण

इस मॉड्यूल के द्वारा विद्यालय प्रमुख के साथ साथ विद्यालय के छात्रों में भी पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के बारे में गहरी समझ बनेगी। विद्यालय के छात्र अपने विषयगत ज्ञान को किसी व्यावसायिक कौशल के रूप में नहीं समझ पाते थे इस मॉड्यूल की सहायता से वे व्यवसायिक कुशलता प्राप्त कर सकते हैं तथा विद्यालय में उपलब्ध विभिन्न भौतिक संसाधनों तथा मानव संसाधनों के द्वारा अपने भावी रोजगार माध्यमों के सम्बन्ध में भली भांति जान पायेंगे। अब तक विद्यालय में छात्रों की समझ अध्ययन के द्वारा केवल शासकीय नौकरी प्राप्त करने की होती थी लेकिन इस मॉड्यूल के दौरान उन्हें इस बात को समझने में सहायता मिलेगी कि वे नौकरी प्राप्त न कर पाने की स्थिति में अन्य क्षेत्रों में भी अपनी योग्यता , कौशल तथा अपनी रूचि के अनुसार व्यवसाय कर सकते हैं।

सम्प्राप्ति

- इस मॉड्यूल के अध्ययन के पश्चात् पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुख इन बिन्दुओं पर समझ बना सकेंगे-
- विद्यालय प्रमुख विद्यालय में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु वातावरण निर्माण कर सकेंगे।
- विद्यालय प्रमुख पूर्व माध्यमिक विद्यालय के लिए निर्धारित पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम के अनुरूप पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रूपांतरित कर सकेंगे।
- विद्यालय प्रमुख व्यावसायिक शिक्षा हेतु विद्यालय में संसाधन उपलब्ध कर सकेंगे।
- विद्यालय प्रमुख पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु पाठ्य आधारित क्रियाकलाप या गतिविधि का आयोजन कर सकेंगे।
- पूर्व व्यावसायिक शिक्षा उपरांत विद्यार्थियों के सीखने का आंकलन/मूल्यांकन कर सकेंगे।

स्व मूल्यांकन

1. स्कूल शिक्षा में व्यवसायीकरण का चरण नहीं है -

अ . जागरूकता ब. अन्वेषण स. प्रशिक्षण द. उपरोक्त सभी

2. व्यावसायिक शिक्षा के गतिविधि आधारित प्रशिक्षण में शामिल नहीं है

अ. सीखना ब. लिखना स. समस्या समाधान द. टीम आधारित परियोजना

3. व्यावसायिक शिक्षा के सम्बन्ध में छात्र प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं -

अ. पुस्तकों से ब. यू ट्यूब विडियो से स. किसी व्यवसाय सम्बन्धित व्यक्ति से द . किसी व्यवसाय की कहानी सुनकर

4. निम्न में से एक कोई व्यवसाय नहीं है -

अ. कपड़ा बुनना ब. कपड़ा सिलाई स. कपड़ा प्रेस करना द. कपड़ा सुखाना

5. आप अपने विद्यालय में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा हेतु वातावरण का निर्माण किस प्रकार तैयार करेंगे?

6. स्कूलों में कार्यानुभव कार्यक्रम सफल क्यों नहीं हो पा रहा है ?

7. स्कूलों में कार्यआधारित शिक्षा को बढ़ावा क्यों दिया जाना चाहिए ?

8. विद्यालय में अध्यापन के दौरान सामान्य शिक्षा के साथ-साथ पूर्व व्यावसायिक शिक्षा को किस प्रकार समायोजित किया जा सकता है ?

9. विद्यालयों में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित संसाधन जुटाने में क्या क्या समस्यायें आ सकती है ?

10. पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के बारे में आप अपने विद्यालय के बच्चों का आंकलन किस प्रकार करेंगे ?

सन्दर्भ

1. कार्य आधारित शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की राज्य नीति ड्राफ्ट - छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग, डी.के.एस. भवन, मंत्रालय रायपुर
2. विद्यालयों में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा मॉड्यूल क्रमांक 3 -निष्ठा - नेतृत्व पैकेज
3. मॉड्यूल 15 प्री वोकेशनल एडुकेशन निष्ठा एन.सी.ई.आर.टी. 2019
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
5. छ.ग. का मासिक पत्रिका चर्चा पत्र फरवरी 2021
6. Trillion Dollar Coach Book – Bill Campbell 🕮 slide show
7. छत्तीसगढ़ के हस्तशिल्प/बस्तर आर्ट/पीतल/रेशम/माटी कला छत्तीसगढ़ माटीकला बोर्ड रायपुर
8. VIGYAN ASHRAM – DEVELOPMENT THROUGH EDUCATION
9. SKILL DEVELOPMENT AND PRE VOCATIONAL TRAINING AT DCCW -

परिशिष्ट

विभिन्न व्यवसायों की सूची

बागवानी	मछली पालन	आरामिल
कृषि कार्य	दर्जी कार्य	लेखन कार्य
पशुपालन	मिट्टी खिलौना निर्माण	प्रिटिंग कार्य
दुग्ध व्यवसाय	लकड़ी खिलौना निर्माण	होटल व्यवसाय
बढ़ई कार्य	वेल्डिंग कार्य	पर्यटन व आथित्य
पेंटिंग कार्य	गमला निर्माण	मीडिया और मनोरंजन
लोहार कार्य	नर्सरी उद्यान निर्माण	निजी सुरक्षा
भवन मिस्त्री	सब्जी उत्पादन	ट्रेवलिंग कार्य
बिजली फिटिंग	मोबाईल रिपेयिंरंग	कपड़े पर प्रिटिंग
साइकिल रिपेयरिंग	टी.वी.रिपेयरिंग	कपड़े पर कशीदा
मोटर सायकल रिपेंयरिंग	कपड़े प्रेस करना	गुलदस्ता निर्माण
रंगाई पोताई कार्य	फोटो फ्रेमिंग करना	माला बनाना
ट्रेक्टर चलाना	मोबाईल दुकान	बैंड बजाना

सजावट के कार्य	मोमबत्ती बनाना	चौकीदारी
कम्प्यूटर कार्य	पत्ती से थाली दोना निर्माण	माली कार्य
मोटर ड्राइविंग सिखाना	कागज से थाली दोना निर्माण	हेयर किंटंग
अगरबत्ती बनाना	रेशम कीट पालन	व्यूटी पार्लर
साबुन बनाना	मधुमक्खी पालन	चमड़ा कार्य
कपड़े की बुनाई	कोसा पालन	ईंट निर्माण
कपड़े की रंगाई	हलवाई कार्य	नर्सिंग कार्य
टाइपिंग कार्य	सुनारी कार्य	पैथोलेब कार्य
फोटोकॉपी	प्लंबर कार्य	दूरसंचार
गायन	संगीत,वाद्ययंत्र बजाना सिखाना	फोटोग्राफी
विडियोग्राफी	सीट कव्हर निर्माण	जूता चप्पल रिपेयिंरंग
इंटिरियर डेकोरेशन	वेटर कार्य	प्रबंधन कार्य
बॉस का कार्य	कला कार्य	आटा चक्की ,धान कुटाई
कपड़े धुलाई	नाटक मंडली	गोबर खाद एवं कण्डे बनाना

ऊन के कार्य	पुराने कपड़ों की रिपेयरिंग	मोटर बाइंडिंग कार्य
पंखा कूलर रिपेयिंरंग	ए.सी. रिपेयरिंग	पर्यटक गाइड
पेटी, अलमारी,कूलर निर्माण	कुम्हार के कार्य	मेंहन्दी के कार्य
पाक कला	चाय दुकान	किराना दुकान
फल जूस दुकान	पान दुकान	चना मुर्रा दुकान
चूड़ी दुकान	गुपचुप , चाट दुकान	ट्रक बस मैकेनिक कार्य

माड्यूल आलेख

श्री गोपेश कुमार साहू
(व्याख्याता)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जांजगीर
श्री प्रद्युम्न कुमार शर्मा
(व्याख्याता)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जांजगीर
श्रीमती सुनीता पाण्डेय
(व्याख्याता)
समग्र शिक्षा बिलासपुर

प्राथमिक स्तर के बच्चों को आसपास के परिवेश से जोड़कर सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) प्राप्त करने में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका

1. विद्यालय नेतृत्व (National Center For School Leadership - NCSL)

मुख्य क्षेत्र - 3 : शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण
यूनिट - 6 : समृद्ध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया: कक्षा के अलावा
सब यूनिट : सीखने के लिए आसपास का परिवेश

लेखन - पुष्पा सिंह (व्याख्याता), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अंबिकापुर
सदस्य - कोर ग्रुप ,स्कूल लीडरशिप अकादमी (SLA) छत्तीसगढ़

2. प्रस्तावना (Introduction) -

नमस्कार विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षक साथियों ।

साथियों, विद्यालय यानी सीखने का स्थान, जहां यह उम्मीद की जाती है कि बच्चे को भयमुक्त वातावरण में अपनी गति से सीखने का अवसर मिले। सीखने में शिक्षक की भूमिका एक सुविधादाता की होती है। विद्यालय प्रमुख के रूप में आपने अपने स्कूल में शिक्षकों की कक्षाओं का अवलोकन किया होगा उन्हें मार्गदर्शन दिया होगा और आप स्वयं भी विषयों का अध्यापन करते होंगे।

आपके अनुसार निम्न में से किस परिस्थिति में बच्चों का सीखना उनके दैनिक जीवन के लिए अधिक उपयोगी हो सकता है ?

- पाठ को शिक्षक व्याख्यान विधि से पढ़ाएं
- पाठ पढ़ाने के लिए कक्षा में चार्ट मॉडल या किसी अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करें
- विषय वस्तु को समझाने के लिए आसपास के परिवेश का उपयोग कर बच्चों को चर्चा, चिंतन-मनन, प्रश्न पूछने और विचारों को साझा करने का अवसर दें

मुझे यकीन है आप मेरी इस बात से सहमत होंगे कि बच्चों को यदि आसपास के परिवेश से जोड़कर शिक्षा दी जाए तो वह अधिक उपयोगी होगी। उदाहरण के लिए प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को जल स्रोत के उपयोग समझाने के लिए किसी जल स्रोत का चित्र दिखाकर टिप्पणी करने के बजाय आसपास के जल स्रोत के पास जाकर चर्चा करना अधिक उपयुक्त होगा। इस प्रकार बच्चे विषय वस्तु को अपने दैनिक जीवन से जोड़ सकेंगे और सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति आसानी से होगी।

विद्यालय प्रमुख, विद्यालय का वो स्तंभ है जिससे सभी हितग्राही (बच्चे, शिक्षक, पालक, अभिभावक, जन प्रतिनिधि, एस.एम.सी. सदस्य, समुदाय के लोग, शिक्षा विभाग से जुड़े सभी अधिकारी-कर्मचारी आदि) सीधे जुड़े होते हैं। विद्यालय प्रमुख के रूप में आपका निर्णय विद्यालय के भविष्य की दिशा तय करता है। इसलिए आपको अपनी हर जिम्मेदारी विद्यालय से जुड़े हर पहलू का बारीकी से अध्ययन करते हुए सही आंकड़े प्राप्त कर, विश्लेषण द्वारा सभी के साझे निर्णय से योजना बनाते हुए टीम के रूप में कार्य करते हुए पूरी करनी होती है। साथ ही लगातार अपने कार्य का मूल्यांकन करते हुए उसमें आवश्यक सुधार करने होते हैं।

विद्यालय प्रमुख का कार्य आसान नहीं है। आप भी ये मानते होंगे कि विद्यालय प्रमुख को लगातार क्षमता विकास की और प्रभावी संप्रेषण की आवश्यकता होती है ताकि समस्या की जड़ तक जाकर समाधान के लिए सही योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन कर सकें।

इस मॉड्यूल में हम मुख्य रूप से विद्यालय प्रमुख के अकादमिक नेतृत्व पर चर्चा करेंगे। किस प्रकार विद्यालय प्रमुख शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सकारात्मक रूपांतरण ला सकता है। यहां प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति के लिए विषयवस्तु को आसपास के परिवेश से जोड़ने पर बात रखी गई है। विद्यार्थी के सामाजिक-आर्थिक परिवेश के साथ उसके विकासात्मक आवश्यकताओं की जानकारी रखते हुए आसपास के परिवेश को जोड़ते हुए सक्रिय अधिगम पर आधारित पाठ योजना का निर्माण कर अधिगम आसान बनाते हुए 'सीखने के प्रतिफल' की प्राप्ति की जा सकती है।

3. Keyword :

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी, आसपास का परिवेश, सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स), अकादमिक नेतृत्व , विद्यालय नेतृत्व

4. उद्देश्य :

शिक्षक एवं विद्यालय प्रमुख सक्षम होंगे -

- विद्यालय प्रमुख और शिक्षक 'विद्यालय नेतृत्व' तथा 'अकादमिक नेतृत्व' की भूमिका को समझने एवं विकसित करने में
- विद्यालय में समृद्ध शिक्षण अधिगम को लागू करने में
- कक्षा के बाहर आसपास के परिवेश को विषय से जोड़ने में
- 'सीखने के प्रतिफल' पर अपनी समझ बनाने में
- बच्चों के सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति में स्थानीय परिवेश की भूमिका को समझकर सक्रिय अधिगम आधारित पाठ योजना बनाने में

5. सामग्री की रूपरेखा (Core Content) -

5.1. विद्यालय नेतृत्व
5.2. अकादमिक नेतृत्व
5.3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण
5.4. प्राथमिक स्तर
5.5. सीखने के लिए आसपास का परिवेश
5.6. सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) की प्राप्ति के लिए कक्षा प्रक्रियाएं

5.1 विद्यालय नेतृत्व- विद्यालय प्रमुख उस पद पर सीधी भर्ती द्वारा या पदोन्नति द्वारा नियुक्त होकर विद्यालय संचालन का कार्य करता है। विद्यालय प्रमुख विद्यालय के संचालन के लिए अनेक कार्य करता है,जैसे प्रशासनिक, अकादमी और समुदाय के साथ कार्य। लेकिन ऐसा पाया गया है कि जब वह नेतृत्वकर्ता की भूमिका स्वीकार कर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करता है तब विद्यालय रूपांतरण की गति बढ़ जाती है। वास्तव में यह दीर्घकालिक कार्य है जो निरंतर भागीदारी से शुरू होता है। पिछले कुछ सालों में जिम्मेदारियों को बांट कर साझे विजन के साथ काम करना एक अच्छे नेतृत्वकर्ता का आवश्यक गुण माना गया है। नेतृत्वकर्ता को लगातार स्वयं के और अपने शिक्षकों के विकास के लिए कार्य करते हुए एक दल के रूप में काम करने की आवश्यकता होती है।

विद्यालय नेतृत्व के सिद्धांत -

- अपने आप को जाने (सामर्थ्य और कमजोरियां) तथा स्वयं के विकास की लगातार कोशिश करते रहे

- तकनीकी दृष्टि से निपुण बने
- उत्तरदायित्व की तलाश करें और अपने कार्यों के लिए उत्तरदायित्व लें
- समय पर सही निर्णय लें
- समस्या की पहचान एवं समाधान
- कार्यों में पहल कर अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करें
- अपने दल के लोगों को जाने और उनकी भलाई के लिए ईमानदारी से सोचें
- अपने शिक्षकों को प्रेरित करें, जानकारी देते रहें और कार्यों में कुशल बनाने के प्रयासरत रहें
- अपने कर्मचारियों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करें
- यह सुनिश्चित करें कि दिए गए काम को अच्छी तरह से समझ लिया गया है, उसकी देखरेख हो रही है और उसे पूरा किया गया है
- प्रभावी संप्रेषण
- एक टीम के रूप में प्रशिक्षण दें

प्रश्न : विगत एक वर्ष में अपने एवं शिक्षकों से व्यवसायिक विकास के लिए क्या-क्या किया ?

5.2 अकादमिक नेतृत्व - साथियों हमारे NCF-2005 में यह कहा गया है कि 'बच्चा स्वाभाविक रूप से सीखता है और वह अपनी गतिविधियों के फलस्वरुप पैदा होने वाले ज्ञान को स्थापित करता है' । बच्चे के परिवेश से प्राप्त ज्ञान को कक्षा में स्थान मिले और वो विषय वस्तु से अपने अनुभव जोड़ पाए इसलिए विद्यालय प्रमुख को अपनी अनेक भूमिकाओं के साथ प्रमुखता से अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का नेतृत्व करना आवश्यक होता है।

अकादमिक नेतृत्व से तात्पर्य उस ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति से है जो कि वह अपने विद्यालय के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में छात्र अधिगम की वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक बदलाव लाता है।

अकादमिक नेतृत्वकर्ता से अपेक्षाएं - अच्छे अकादमिक नेतृत्वकर्ता से ये उम्मीद की जाती है कि वो समाज और शिक्षकों को मार्गदर्शन दें जिससे विद्यार्थियों के सीखने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हो सके । साथ ही उसमें निम्न कौशल भी आवश्यक हैं -

- सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप शिक्षा विकास
- सामूहिक कार्यक्रमों में समन्वय

- नियोजन, व्यवस्था तथा संलग्नता की सफलता
- शैक्षिक स्तर की निरंतर उन्नति
- शिक्षकों का व्यवसायिक विकास
- पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की पूरी जानकारी
- कक्षावार एवं विषयवार सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) की जानकारी

प्रश्न : आपके अनुसार अकादमिक नेतृत्वकर्ता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए ? इन गुणों को क्रम से लिखिए और पांच शीर्ष गुणों का उल्लेख कीजिये।

प्रश्न : आपमें अकादमिक नेतृत्वकर्ता के कौन-कौन से गुण हैं?

5.3 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण - साथियों जैसा कि आप जानते हैं शाला में अध्यापन कार्य शिक्षकों द्वारा किया जाता है। लेकिन प्राथमिक विद्यालयों में प्रधान पाठक भी प्रायः अध्यापन कार्य करते हैं जिससे उन्हें बच्चों की आवश्यकताओं को समझते हुए शिक्षण कार्य करने में मदद मिलती है। शिक्षण कार्य को बेहतर बनाने में विद्यालय प्रमुख की विशेष भूमिका होती है। बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं की समझ और शिक्षकों को उचित मार्गदर्शन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक पुष्ट बनाता है। अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में वे अध्यापकों की कक्षा का अवलोकन कर प्रतिपुष्टि देते हैं, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षक और सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं साथ ही कक्षाओं में तथा विद्यालयों में समावेशन की समझ भी शिक्षकों में लाते हैं।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए विद्यालय प्रमुख के लिए निम्न जानकारी और कौशल आवश्यक हैं -

- बच्चों के समग्र विकास में सहयोग करने के लिए विद्यालय एवं शिक्षा के उद्देश्यों की जानकारी
- हर बच्चा सीख सकता है, यह मानते हुये बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं (पोषण, परिवारिक बिखराव, अधिगम अयोग्यता, भेदभाव का प्रभाव) के अनुसार अधिगम वातावरण का निर्माण
- बच्चों को सीखने में आनंद आए और सक्रिय अधिगम हो इसके लिए बाल केंद्रित शिक्षण शास्त्र की समझ

- कक्षाओं में सक्रिय अधिगम के लिए सक्रिय अधिगम पर आधारित पाठ योजना का निर्माण (रोलप्ले, कहानी सुनाना, चर्चा, चिंतन, साथी के साथ साझा करना ,वीडियो सह चर्चा, पहेली आदि का उपयोग)
- सीखने के प्रतिफल की जानकारी और समझ

प्रश्न : आपके अनुसार योग्य छात्र होने का क्या अर्थ है?

प्रश्न : कक्षा में एक बच्चे का अवलोकन करना कितना महत्वपूर्ण है ?

प्रश्न : क्या होता है जब बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताएं पूरी नहीं होती?

5.4 प्राथमिक स्तर - अभी तक की व्यवस्था के अनुसार कक्षा पहली से कक्षा पांचवी तक के बच्चों का अध्ययन-अध्यापन प्राथमिक विद्यालय में किया जाता है। लेकिन हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 5+3+3+4 डिजाइन लागू किया जाना है। जिसके तहत क्रमशः फाऊंडेशनल स्टेज (दो भागों में अर्थात आंगनबाड़ी/प्री स्कूल के 3 साल + प्राथमिक स्कूल के कक्षा 1-2 में 2 साल ,3 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए) तथा प्रीपरेटरी स्टेज (कक्षा 3-5, 8 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए) होगी।

NCF-2005 के अनुसार जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश लेते हैं तो उनके पास पहले से ही समृद्ध भाषा होती है और छोटे अंकों का आधार होता है। हर बच्चा बहुत ही सक्रिय होकर दिन और रात के प्राकृतिक चक्र को देखता है, मौसम, पानी, अपने आसपास के जानवरों और पौधों की भी समझ रखता है। जब बच्चे के अनुभव को कक्षा में स्थान मिलता है, उसे प्रश्न पूछने, चर्चा करने की आज़ादी होती है तब ज्ञान का निर्माण होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार खेल-खेल में और गतिविधियों पर आधारित शिक्षा प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए अधिक उपयोगी है।

प्रश्न : बाल केंद्रित शिक्षा शास्त्र से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न : आप अपने विद्यालय में किन विधियों का प्रयोग करते हैं जिससे विद्यार्थी को सीखने में आनंद आए?

प्रश्न : सक्रिय अधिगम से आप क्या समझते हैं? आपके अनुसार सक्रिय अधिगम की कक्षा में कौन-कौन सी बाधाएं हैं?

5.5 सीखने के लिए आसपास का परिवेश - हम जानते हैं कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के पाठ्यचर्या निर्माण के पांच निर्देशक सिद्धांतों में से पहला सिद्धांत है - ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना और दूसरा सिद्धांत है पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो यह सुनिश्चित करना । साथ ही पाठ्यचर्या का वर्तमान सरोकार बच्चों को सार्थक अनुभव देने वाली तथा समाहित करने वाली शिक्षा प्रदान करने का है।

सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं। बच्चे स्कूल के भीतर व बाहर दोनों जगहों पर सीखते हैं। इन दोनों जगहों में यदि संबंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है ।बच्चे अपने आसपास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं, वे खोजबीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीजों के साथ कार्य करते हैं, चीजें बनाते हैं और अर्थ ग्रहण करते हैं।

NCSL में भी विद्यालय नेतृत्व की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के रूपांतरण में समृद्ध शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के तहत सीखने के लिए आसपास के परिवेश की बात कही गयी है।

सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग है आसपास के वातावरण, प्रकृति, चीजों व लोगों के कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अंतः क्रिया करना। परिवेश के साथ अंतः क्रिया करके ही बच्चा ज्ञान सृजित करता है और जीवन में सार्थकता पाता है। ज्ञान को परिवेश से जोड़ना इसलिए आवश्यक है क्योंकि ज्ञान का मतलब ही दुनिया से जुड़ना है यह केवल साधन नहीं है बल्कि साधन और साध्य दोनों है।

आइए देखते हैं सरगुजा जिले (छत्तीसगढ़) के प्राथमिक विद्यालयों के कुछ **वीडियो** जिसमें शिक्षक बच्चों को सिखाने के लिए आसपास के परिवेश को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं -

https://youtu.be/lq3LUyUyCjA
https://youtu.be/Hf9u3McBFGo
https://youtu.be/gYo4gCYK_jw

साथियों यदि विषय वस्तु पर समझ अच्छी है तो आसपास के परिवेश से जोड़कर बच्चों को समझाना बहुत मुश्किल नहीं है।

- अब आप सोचिए कि आप अपने विद्यालय में विभिन्न विषयों के विषय वस्तुओं को किस तरह आसपास के परिवेश से जोड़ेंगे जिससे बच्चों के लिए सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करना आसान बनाया जा सके।

5.6 सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) की प्राप्ति के लिए कक्षा में प्रक्रियाएं - साथियों शिक्षा का अधिकार अधिनियम(RTE) - 2009 में बच्चों को कक्षा पहली में प्रवेश के पश्चात कक्षा आठवीं तक न रोकने की बात कही गई है। जिसमें यह माना गया है कि बच्चे सीखेंगे और प्रत्येक विद्यार्थी अपने कक्षा अनुसार विषय पर अपनी पूरी समझ बनाकर अगली कक्षा में प्रवेश करेगा। कुछ वर्षों पश्चात प्रत्येक कक्षा में शिक्षा की गुणवत्ता जानने के लिए NCERT द्वारा 'सीखने के प्रतिफल' को परिभाषित किया गया। सीखने के प्रतिफल प्रत्येक विषय हेतु कक्षावार हैं, जिनकी जानकारी बालक, पालक, शिक्षक एवं सभी हितग्राहियों के लिए आवश्यक माना गया है।

'Learning Outcomes are statement of what is expected that a student will be able to do as a result of a learning activity'

सीखने के प्रतिफल ज्ञान एवं कौशल से संबंधित एक प्रकार की जांच बिंदु है जो गुणात्मक एवं मात्रात्मक रूप से मापे जा सकते हैं। ये बताते हैं कि विषय आधारित किसी विषयवस्तु में विद्यार्थी का प्रदर्शन कैसा है। सीखने के प्रतिफल शिक्षक को कक्षा एवं विषय के अनुसार एक लक्ष्य देता है कि विद्यार्थी को क्या **कर सकने** में समर्थ बनाना है, इसके लिए शिक्षक प्रभावशाली एवं बच्चे के लिए रुचिकर शिक्षण विधि एवं शिक्षण सामग्री का चयन स्वयं कर सकते हैं।

अतः **सीखने के प्रतिफल कक्षा-वार प्रक्रिया आधारित छोटे लक्ष्य हैं जो "बच्चों के संपूर्ण विकास हेतु अपेक्षित समग्र अधिगम के अनुसार बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक तरीके से मापने योग्य है।**" शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ योजना तैयार करते समय "प्रासंगिक संसाधनों और उपयुक्त अधिगम प्रक्रियाओं" का उपयोग करें और "समावेशी कक्षा में विभिन्न शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुसार अधिगम की स्थिति/ अवसर प्रदान करने" के लिए प्रोत्साहित करें।

बच्चे सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करें इसके लिए -

- विद्यालय प्रमुख के रूप में आप शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल में प्रशिक्षण और सहयोग दे सकते हैं।
- सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति के लिए सक्रिय अधिगम आधारित पाठ योजना के निर्माण में सलाहकार की भूमिका निभा सकते हैं।

- बच्चों को अपने आसपास के परिवेश की बेहतर समझ होती है इसलिए उनका ज्ञान स्थायी बनाने के लिए विषयवस्तु को स्कूल के बाहर के जीवन (आसपास के परिवेश) से जोड़कर बताने की आवश्यकता पर बल ।

(NCERT द्वारा तैयार सीखने (अधिगम) के प्रतिफलों पर विस्तृत डॉक्यूमेंट https://ncert.nic.in से प्राप्त किया जा सकता है)

आइए सीखने के अधिगम पर आधारित scert रायपुर द्वारा तैयार एक पाठ योजना का अध्ययन करें-

Day - 5

पाठ योजना

शिक्षक किसी पाठ या इकाई को पढ़ाने के लिए उसे छोटे–छोटे अंशों या उप इकाईयों में बांट लेता है। एक उप इकाई की विषय–वस्तु को एक कालखण्ड में पढ़ाया जाता है। इस कालखण्ड में निर्धारित विषय–वस्तु को पढ़ाने के लिए एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाती है, जिसे पाठ योजना कहा जाता है। शिक्षक के लिए पाठ योजना का निर्माण उतना ही आवश्यक है जितना एक इंजीनियर के लिए मकान बनाने के लिए मानचित्र या ब्लूप्रिंट का होना।

- पाठ योजना कक्षा शिक्षक को दिशा–निर्देश प्रदान करती है।
- यह शिक्षक के लिए पथ–प्रदर्शन एवं मित्र का कार्य करती है।
- पाठ योजना शिक्षण की विविध क्रियाओं और सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी देती है।
- पाठ योजना के निर्माण में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए जाने के अवसर विद्यमान होते है।
- एक अच्छी पाठ योजना बनाने के लिए शिक्षक को अपने विषय की गहन जानकारी के साथ अन्य विषयों का समान्य ज्ञान होना चाहिए एवं कक्षा स्तर और विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की जानकारी भी शिक्षक को होनी चाहिए।

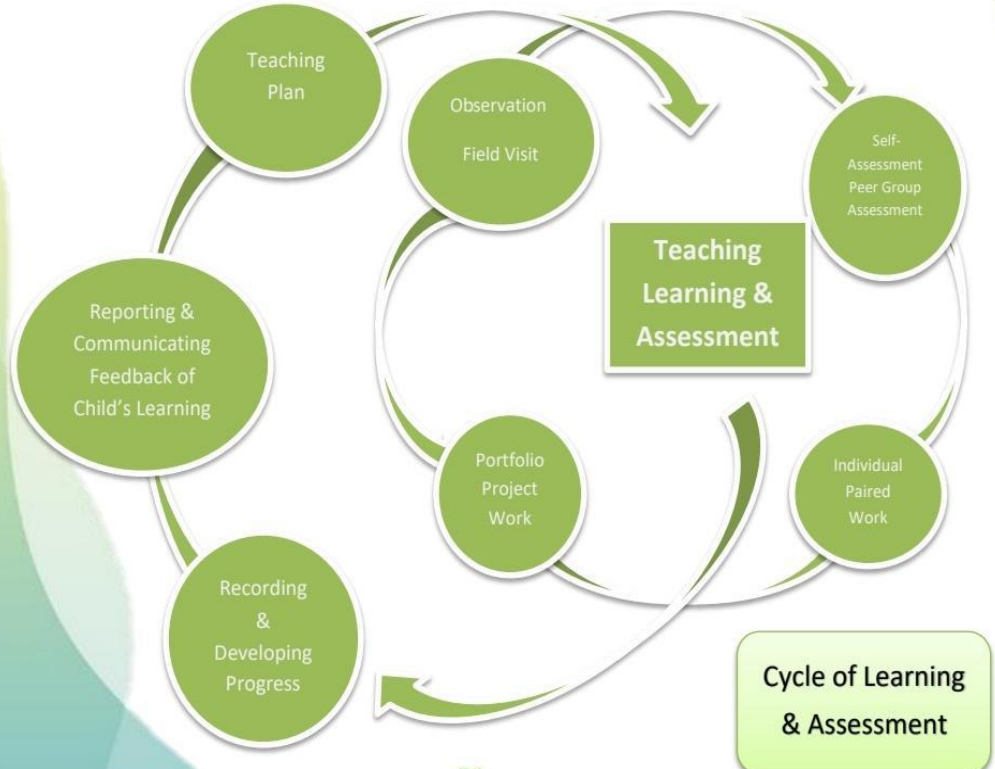

LESSON PLAN

Class	.....	Date	.....
Subject	.....	Period	.....
Topic	.....		
Sub Topic	.....		

Learning Outcome:

Level 1 .....

Level 2 .....

....

....

Leven n .....

Word list:

Teaching Learning Process

1. Activity
   - Previous Knowledge
   - Linking with Content
2. TLM
3. Seating arrangement: Individual/ Pair/ Share/ Group
4. Classroom/Outdoor/Lab/Any other (specify)

ASSESSMENT:-

RECAPITUATION:-

ASSIGNMENT:-

REFLECTION BY THE TEACHER:-

पाठ योजना (Lesson Plan)

कक्षा 4 – विषय पर्यावरण अध्ययन कालखंड – तीसरा

प्रकरण (Topic) - दिशाएं एवं नक्शा कुल – 3 कालखंड

सीखने का प्रतिफल – E 411

Level 1 - बच्चे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं को समझते हैं।

Level 2 - बच्चे आस–पास के स्थानों को संकेतों के पैर्टन में पहचानते हैं, जैसे अस्पताल, कुआँ, मंदिर, नदी, पार्क, विद्यालय एवं अन्य जानी पहचानी इमारतें एवं स्थान आदि।

Level 3 – संकेतों के आधार पर किसी स्थान, स्थिति को चित्रों द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं।

Level 4 - बच्चे संकेतों के आधार पर नजरी नक्शे का निर्माण करते हैं।

Word list - NEWS, स्केच, नक्शा, विभिन्न संकेत।

Teaching Learning Process

गतिविधियाँ – बच्चों के आस–पास स्थित स्थानों, इमारतों आदि के संकेतों की सहायता से बच्चों के साथ मिलकर स्केच एवं नजरी नक्शा बनाना।

पूर्वज्ञान – बच्चे दिशाओं और आस–पास के संकेतों में निहित जानकारी को समझते हैं। यहीं से पाठ आगे प्रारंभ करेंगे।

शिक्षण अधिगम सामग्री – चॉक, ब्लैकबोर्ड, चार्ट, कलर पेन्सिल एवं टेप

कक्षा की बैठक व्यवस्था – बच्चे समूह में बैठेंगे।
यहाँ एक स्कूल की कक्षा 4 का स्केच (चित्र) दिया गया है, इसे देखकर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

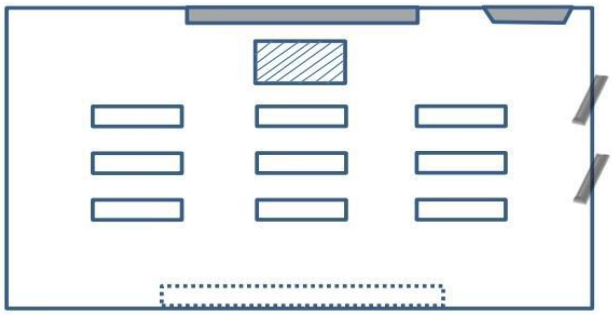

संकेत –

ब्लैकबोर्ड

शिक्षक टेबल

डेस्क बैंच

प्रयोगशाला

खिड़की

दरवाजा

प्रश्न 1. कक्षा में कितनी खिडकियाँ हैं ?

प्रश्न 2. शिक्षक के टेबल के पीछे क्या है ?

प्रश्न 3. सबसे पीछे के डेस्क/बैंच के पीछे क्या है ?

नीचे छ.ग. राज्य का नक्शा देखें। इसमें दिशाओं को पहचानने की कोशिश करें। यहाँ उत्तर दिशा ऊपर की ओर, दक्षिण दिशा नीचे की ओर, पश्चिम बायीं ओर तथा पूर्व दायीं ओर स्थित है।

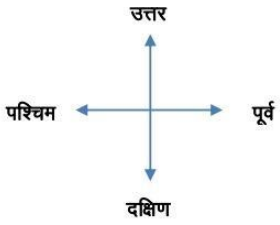

- आपने देखा दिशाएं नक्शे के ऊपर दायीं ओर कोने में दर्शायी जाती हैं।
- नक्शा बनाने के लिए पैमाना – प्रत्येक नक्शा बनाने के लिए एक पैमाना लिया जाता है जैसे 100 km = 1 cm
- क्या आप बता सकते हैं, ऐसा क्यों होता होगा ?
- कक्षा में बच्चों से चर्चा करें हो सके तो उनके उत्तरों, विचारों को ब्लैक बोर्ड पर लिखें। बच्चों के साथ ही नक्शा बनाने के लिए पैमाना लेने की अवधारणा को स्पष्ट करें।

- मापने का अभ्यास करके सारणी को पूरा कीजिए :

क्र	वस्तु का नाम	हाथ में या अंगुलियों से माप	स्केल से माप (सेमी में)
		अनुमानित माप	वास्तविक माप
1	कलम		
2	पुस्तक की लम्बाई		
3.	गिलास की ऊँचाई		
4.	साबुन की लम्बाई		
5	कॉपी		
6.	टेबल		

शिक्षक स्वयं विभिन्न पाठो पर सीखने के प्रतिफल आधारित पाठ योजना तैयार करें।

Reflection by the Teacher:

पर्यावरण विषय पर सीखने के अधिगम आधारित उपरोक्त पाठ योजना आपके समक्ष एक नमूना मात्र है, इस तरह आप सीखने के अधिगम आधारित अलग-अलग विषयों के पाठ योजना के निर्माण में अपने शिक्षकों की मदद कर सकते हैं।

6. सारांश - साथियों बात विद्यालय प्रमुख के प्रशासनिक नेतृत्व की हो, नवचारों की हो, साझेदारी की हो, टीम भावना की हो, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की हो या बच्चों के विकासात्मक आवश्यकताओं की हो, हम सब मिलकर जो भी कार्य करते हैं उसका परिणाम हम सीखने के प्रतिफल के रूप में ही देखना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम जिन कौशलों के लिए विभिन्न कक्षाओं में विषयों का अध्यापन कर रहे हैं हमारे बच्चे उनमें दक्ष बने। कक्षाओं में प्राप्त ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग कर सकें। उनका आत्मविश्वास बढ़े, वे अपने लिए बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें, समाज और देश के लिए अच्छा कार्य कर सकें। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें हर तरह से कार्य करना होगा।

अकादमिक नेतृत्व कर्ता के रूप में प्राथमिक कक्षाओं में हम इस लक्ष्य को पाने की दिशा में आसपास के परिवेश को विषय वस्तु से जोड़कर एक पहल कर सकते हैं। हर बच्चा सीख सकता है, उसके पास पर्याप्त अनुभव होता है उसे हम कक्षा में लाने का मौका दें सक्रिय अधिगम आधारित पाठ योजना का निर्माण करें और सीखने के अधिगम की प्राप्ति में सहयोगी बने ।

इसके लिए विद्यालय में भौतिक सुविधाओं के साथ-साथ आवश्यकतानुसार शिक्षकों को अकादमिक सहयोग जैसे- विषय आधारित प्रशिक्षण, शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षण, शिक्षण अधिगम सामग्री की जानकारी, नवाचारों को प्रोत्साहन, प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी (PLC) के माध्यम से विषय आधारित चर्चाएं, स्कूल के आसपास के विशेषज्ञों से सलाह, ऑनलाइन/ ऑफलाइन सेमिनार में सहभागिता आदि के लिए भी प्रोत्साहित करना होगा एवं सहयोग देना होगा। पालकों के साथ संबंध मजबूत करना होगा ताकि विद्यार्थी के अधिगम की प्रगति पर चर्चा की जा सके और कमजोर पक्ष पर कार्य किया जा सके। समाज को विद्यालय से जोड़ना होगा ताकि समाज में हो रहे नवीन अनुसंधानों, आयामों तथा नई विधियां से अद्यतन रहा जा सके ।

1. शीर्षक (Title) - प्राथमिक स्तर के बच्चों को आसपास के परिवेश से जोड़कर सीखने के प्रतिफल (लर्निंग आउटकम्स) प्राप्त करने में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका

2. विद्यालय नेतृत्व - वास्तव में यह दीर्घकालिक कार्य है जो निरंतर भागीदारी से शुरू होता है। पिछले कुछ सालों में जिम्मेदारियों को बांट कर साझे विजन के साथ काम करना एक अच्छे नेतृत्वकर्ता का आवश्यक गुण माना गया है। नेतृत्वकर्ता को लगातार स्वयं के और अपने शिक्षकों के विकास के लिए कार्य करते हुए एक दल के रूप में काम करने की आवश्यकता होती है।

3. अकादमिक नेतृत्व - अकादमिक नेतृत्व से तात्पर्य उस ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति से है जो कि वह अपने विद्यालय के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में छात्र अधिगम की वृद्धि के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सकारात्मक बदलाव लाता है।

4. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का रूपांतरण - विद्यालय प्रमुख शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के रूपांतरण के लिए अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में अध्यापकों की कक्षा का अवलोकन कर प्रतिपुष्टि देते हैं, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षक और सलाहकार के रूप में कार्य करते हैं साथ ही कक्षाओं में तथा विद्यालयों में समावेशन की समझ भी शिक्षकों में लाते हैं।

5. सीखने के लिए आसपास का परिवेश - सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए प्रेरित रहते हैं। बच्चे स्कूल के भीतर व बाहर दोनों जगहों पर सीखते हैं। इन दोनों जगहों में यदि संबंध रहे तो सीखने की प्रक्रिया पुष्ट होती है ।बच्चे अपने आसपास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं, वे खोजबीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीजों के साथ कार्य करते हैं, चीजें बनाते हैं और अर्थ ग्रहण करते हैं।

https://youtu.be/Iq3LUyUyCjA

https://youtu.be/Hf9u3McBFGo

https://youtu.be/gYo4gCYK_jw

6. सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति के लिए कक्षा में प्रक्रियाएं - सीखने के प्रतिफल कक्षा-वार प्रक्रिया आधारित छोटे लक्ष्य हैं जो "बच्चों के संपूर्ण विकास हेतु अपेक्षित समग्र अधिगम के अनुसार बच्चे की प्रगति का आकलन करने के लिए गुणात्मक या मात्रात्मक तरीके से मापने योग्य है।

7. बच्चे सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करें इसके लिए -

- विद्यालय प्रमुख के रूप में आप शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल में प्रशिक्षण और सहयोग दे सकते हैं।
- सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति के लिए सक्रिय अधिगम आधारित पाठ योजना के निर्माण में सलाहकार की भूमिका निभा सकते हैं।

- बच्चों को अपने आसपास के परिवेश की बेहतर समझ होती है इसलिए उनका ज्ञान स्थायी बनाने के लिए विषयवस्तु को स्कूल के बाहर के जीवन (आसपास के परिवेश) से जोड़कर बताने की आवश्यकता पर बल ।

7. सन्दर्भ (References)

- Learning Outcomes, https://ncert.nic.in
- NCF - 2005
- NEP - 2020
- One month resources material, ncsl | Home, ncsl.niepa.ac.in
- School Leadership, http://nishtha.ncert.gov.in
- Training module-EVS, SLA -Analysis Based Training Module, http://scert.cg.gov.in

8. चिंतन मनन के प्रश्न :-

1.शिक्षक के कक्षा के अवलोकन पश्चात विद्यालय प्रमुख द्वारा किस प्रकार का प्रतिपुष्टि दिया जाना चाहिए जिससे शिक्षण में सकारात्मक बदलाव हो?

2. विद्यालय प्रमुख शिक्षकों के लिए कब-कब प्रशिक्षक और सलाहकार की भूमिका निभा सकते हैं?

3. क्या आप अपने संकुल, विकासखंड या जिले की अन्य विद्यालय प्रमुख के कार्यों का विश्लेषण कर अपने विद्यालय की प्रक्रिया में कोई बदलाव लाते हैं,?

4. आप अपने विद्यालय में बच्चों के सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति हेतु क्या नवाचार करते हैं?

5. दिए गए पाठ योजना के आधार पर अपने शिक्षकों से सीखने के प्रतिफल आधारित विभिन्न विषयों में पाठ योजना का निर्माण एवं शिक्षण करवाइए।

6. पर्यावरण अध्ययन के संकेत एवं नक्शा वाले अध्याय के पाठ योजना में आसपास के परिवेश को आप किस तरह शामिल करेंगे?

माड्यूल आलेख

श्रीमती पुष्पा सिंह

(व्याख्याता)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अंबिकापुर

छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रो में प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बच्चों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के द्वारा शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका

कुंजी शब्द (की-वर्ड) :-

छत्तीसगढ़, नक्सल प्रभावित, प्राथमिक स्तर, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, ICT ऑनलाइन, शिक्षण-अधिगम, विद्यालय नेतृत्व आदि।

विद्यालय नेतृत्वकर्त्ता हेतु चितंन के प्रश्न :-

1. क्या आपकी शाला छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में आता है -

हाँ / कभी-कभी / नही / बिल्कुल नही

2. क्या आपके विद्यालय में बच्चों की नियमित अथवा सम्मुख शिक्षण -अधिनियम प्रक्रिय किसी कारणवश बाधित होती है -

हाँ / कभी-कभी / नही / बिल्कुल नही

3. क्या आपकी शाला के सभी शिक्षक /शिक्षिकाएं ICT और online शिक्षण कार्य में दक्ष हैं -

हाँ / कभी-कभी / नही / बिल्कुल नही

4. क्या आपके पास कोई यूक्ति है जिससे ICT का उपयोग करके एक नेतृत्व कर्ता के रुप में अकादमिक गतिविधियो को और बेहतर बना सकते हैं -

हाँ / कभी-कभी / नही / बिल्कुल नही

5. क्या आपने कोई योजना बनाई है, जिससे आप नक्सल प्रभावित छत्तीसगढ़ राज्य के अन्य शालाओ की अकादमिक व ICT आधारित कोई सहयोग कर सकते हैं -

हाँ / कभी-कभी / नही / बिल्कुल नही

माड्यूल के उद्देश्य और अधिगम प्रतिफल के बिन्दु :-

1. छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के विद्यालय विद्यालय नेतृत्वकर्ता सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की बेहतर समझ बना सकेंगे।
2. विद्यालय नेतृत्वकर्ता नक्सल प्रभावित क्षेत्र के बच्चों ऑनलान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से भली भाँति जोड़ सकेंगे।
3. ICT और ऑनलाइन शिक्षण अधिगम, आंकलन और मूल्यांकन को विद्यालय नेतृत्वकर्ता और शिक्षक सहजता से कर सकेंगे।
4. ऑनलाइन प्लेटफार्म और वेबसाइट्स पर उपलब्ध प्रशिक्षण को प्राप्त करके विद्यालय नेतृत्वकर्ता और शिक्षक स्वयं का क्षमता विकास कर सकेंगे।
5. विद्यालय नेतृत्वकर्ता ICT और ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी समस्याओं को दूर करके बेहतर दृश्टिकोण विकसित कर सकेंगे और अन्य शालाओं के अकादमिक समस्याओं को दूर करने में उनकी मदद कर सकेंगे।

माड्यूल की रूपरेखा :-

1. छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों का दायरा।
2. नक्सल प्रभावित जिलों में अधोसंरचना और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की स्थिति।
3. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का संक्षिप्त परिचय।
4. विद्यालय नेतृत्वकर्ता के ICT संबंधी स्वयं का विकास : एक संकल्पना
5. (NCSL मुख्य क्षेत्र 2 की अवधारणा का विकास, 3.1 निरंतर पेशेवर विकास)
6. छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में विषिश्ट ऑनलाइन प्लेटफार्म पर शिक्षण-अधिगम, मूल्यांकन और प्रशिक्षण जैसे “पढ़ई तुंहर द्वार” DIKSHA, NISHTHA, स्वयं, स्वयंप्रभा और Chalklit आदि।
7. (NCSL मुख्य क्षेत्र 3 की अवधारणा का विकास, 2.1 (क) प्रशिक्षण और सलाह)
8. नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में प्ब्ज् और ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी अकादमिक समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव।

प्रस्तावना :-

भारत में कई राज्य नक्सल समस्याओं से ग्रसित है। छत्तीसगढ़ राज्य भी नक्सल समस्याओं के प्रभाव से अछूता नही है। इसका प्रभाव यहाँ की समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि सभी महत्वपूर्ण घटकों पर परिलच्छित होता है। छत्तीसगढ़ के जनजीवन, अधोसंरचना और शिक्षा पर नक्सल प्रभाव का असर सर्वाधिक देखने को मिलता है। यहाँ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शिक्षा की अलख जगाना, राज्य

शासन, प्रषासनिक अधिकारी, विद्यालय नेतृत्वकर्ता, शिक्षक और समुदाय के लिए किसी चुनौति से कम नही है।

इस माड्यूल के माध्यम से राज्य के नक्सल प्रभावित जिलों और क्षेत्रों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की गई है। इन क्षेत्रों की अधोसंरचना और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में वर्तमान स्थिति के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आ रही अकादमिक, प्ब्ज् और ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी समस्याओं का वर्णन किया गया है। इन सब समस्याओं के बावजूद विद्यालय नेतृत्वकर्ता किस प्रकार, लगातार बेहतर प्रदर्षन कर सकता है, यह भी बताने का अथक प्रयास किया गया है। नक्सल समस्याओं और कोविद-19 के महामारी काल में भी कुछ विद्यालयों के नेतृत्वकर्ता समुदाय, उच्च अधिकारियों और स्टॉफ से समन्वय स्थापित करके प्ब्ज् और ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र कुछ अच्छा करने हेतु सतत् प्रयासरत है। उम्मीद है इस माड्यूल के माध्यम से विद्यालय नेतृत्वर्ता और शिक्षक अपनी शाला की अकादमिक समस्याओं का समाधान प्ब्ज् और ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से कर सकेंगे और अध्ययनरत बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ सकेंगे।

माड्यूल के कोर कंटेन्ट :-

बिन्दु : 1 छत्तीसगढ़ राज्य के नक्शल प्रभावित क्षेत्रों का दायरा

छत्तीसगढ़ राज्य के साथ भारतवर्ष के कुछ राज्य, विगत कुछ वर्षो से नक्सल घटनाओं से प्रभावित रहा है। ऐसे में यहां की जन-जीवन, समाजिक और आर्थिक वातावरण के साथ शिक्षा व्यवस्था का भी होना, एक स्वाभाविक बात है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा जारी लोकसभा के अतारांकित प्रश्न संख्या 828 दिनांक 01 मार्च 2016 के उत्तर में गृहराज्य मंत्री ने नक्सल घटनाओं से प्रभावित राज्यों और जिलों के संबंध में निम्न लिखित जानकारी प्रदान की है। इसमे देषं के 10 राज्यों से 106 जिलो की पहचान की गई है। इन राज्यों के नाम और प्रभावित जिलों की संख्या इस प्रकार है - आन्ध्रप्रदेश के 8 जिले, तेलंगाना के 8 जिले, बिहार के 22, छ.ग. के 16 जिले, झारखण्ड के 21 जिले, मध्यप्रदेश का 1 जिला (बालाघाट), महाराष्ट्र के 4 जिले, उड़ीसा के 19 जिले, उत्तरप्रदेश के जिले और पश्चिम बंगाल के 04 जिले शामिल है। इस प्रकार देश में कुल 106 जिले नक्सल घटनाओं से प्रभावित है।

इसमें से सर्वाधिक नक्सल प्रभावित जिलों वाले राज्य के क्रम में प्रथम स्थान पर बिहार, बिहार के बाद द्वितिय स्थान पर झारखण्ड, त्रीतीय स्थान उड़िसा और चौथे स्थान पर 16 जिलों के साथ छ.ग. राज्य का नाम आता है। छ.ग. राज्य से नक्सल प्रभावित 16 जिलों के नाम निम्नलिखित है -

1. बस्तर 2. बीजापुर 3. दंतेवाड़ा 4. जशपुर

5. कांकेर	6. कोरिया	7. नारायणपुर	8. राजनांदगाँव
9. सरगुजा	10. धमतरी	11. माहासमुंद	12. घरियाबंद
13. बालोद	14. सुकमा	15. कोण्डागाँव	16. बलरामपुर

बिन्दु : 2 प्रभावित जिलों में अधोसंरचना और शिक्षण अधिगम की स्थिति

छत्तीसगढ़ राज्य में नक्सली धटनाओं से प्रभावित जिलों में जान-माल के साथ षासकीय अधोसंरचना कां बहुत बहुत क्षति पहुंचा है। अधोसंरचना में मुख्य रूप् से सड़क, पुल, मोबाईल के टॉवर, बिजली की सप्लाई और शासकीय भवन जैसे पुलिस थाना, ग्राम पंचायत और स्कूल भवन आदि सम्मलित है। इस विपदा में एक सुखद पक्ष यह रहा कि विद्यालय संचालन के दौरान विद्यालय और बच्चों को कोई छति नहीं पहुंचा।

समय-समय पर केन्द्र और राज्य शासन के द्वारा नक्सल प्रभावित घटनाओं के क्षतिपूर्ति हेतु कुछ योजनाए चलाई गई है जिसे सड़क अवश्यकता योजना - 1 कोशल विकास योजना, पुलिस थानों का निर्माण एवं शुद्धिकरण मोबाईल टावर का निर्माण शाला भवन एवं अन्य शासकीय संरचनाओं के निर्माण द्वारा भरपाई करने का प्रयास कीया गया है परन्तु इसके बावजुद भी शिक्षण व्यवस्था और मोबाईल नेटवर्क को भयमुक्त होकर गतिविधियों के संचालन में सुरक्षा बल और स्थानिय निवासीयों के सहयोग से व्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास किया जा रहा है।

बिन्दु : 3 सूचना एवं संचार प्रौघोगिकी (आई. सी. टी.) का परिचय

आधुनिक युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का अन्य क्षेत्रों के समान शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व है। आज के युग को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के क्षेत्र में "क्रांति का युग" कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। इस तकनीक ने मानव जीवन को न केवल सरल और सुगम बनाया बल्कि कम श्रम में अधिकतम प्रतिफल का मार्ग दिखाया है। शिक्षा के क्षेत्र में आई.सी.टी. का प्रभाव विशेष महत्व का है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में इसका उपयोग प्रभावशाली तरीके से किया जा सकता है। इसके उदाहरण स्वरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया कार्यक्रम एवं विद्यालय योजना निर्माण, प्रश्न पत्र निर्माण, शिक्षण योजना निर्माण, मूल्यांकन प्रक्रिया, परीक्षा परिणाम और प्रमाणपत्र निर्माण में भी आई.सी.टी. का उपयोग किया जा सकता है।

इसी क्रम में कोविड-19 महामारी काल में ऑनलाईन शिक्षण-अधिगम का एक नया अध्याय जुड़ गया है। इस सूचना क्रांति ने भविष्य की चुनौतियों, अवसरों, प्रतिस्पर्धाओं, नवाचारों और सृजनात्मकता का

नवीन मार्ग प्रषस्त किया है। आज के परिदृष्य में स्वयं को अद्यतन करने के लिए, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का न केवल अध्ययन करना अपितु इसमें कौशल प्राप्त करना भी अनिवार्य हो गया है। आई.सी.टी. में कौशल प्राप्त व्यक्ति इंटरनेट से संपर्क स्थापित कर कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन या टेबलेट में जरूरी एप्लीकेषन को आसानी से एक्सेस कर सकता है। कम्प्युटर उपकरण को सहजता से समझने के लिए इसे मुख्यतः दो भागों बांटा जा सकता है- पहला हार्डवेयर और दूसरा सॉफ्टवेयर। हार्डवेयर मशीनी उपकरण से सम्बन्धित है, जबकि सॉफ्टवेयर कम्प्यूटर में कार्य करने के लिए एप्लीकेशन से है। हार्डवेयर को चार प्रमुख घटको में विभाजित किया जा सकता है -

1. इनपुट डिवाइस
2. आउटपुट डिवाइस
3. प्रोसेसिंग डिवाइस
4. स्टोरेज डिवाइस

इनपुट डिवाइस से डेटा कम्प्यूटर में प्रवेश कराते है। इसके उदाहरण की-बोर्ड, मॉउस, कैमरा, स्केनर,टच-स्क्रीन, माइक्रोफोन, लाइटपेन आदि है। आउटपुट डिवाइस के द्वारा सम्पादित कार्य को परिणाम के रूप् में प्राप्त करते हैं। इसके उदाहरण मॉनिटर, प्रिन्टर, स्पीकर, प्रोजेक्टर आदि है। प्रोसेसिंग डिवाइस, कम्पूटर में प्रवेश होने वाले डेटा को प्रोसेस कर परिणाम में परिवर्तित करता है। इसके उदाहरण CPU सेन्टरल प्रोसेसिंग यूनिट, कन्ट्रोल यूनिट और ALU आदि आते हैं। स्टोरेज डिवाइस कम्प्यूटर की मेमोरी होती है, जो डेटा को स्टोर करके रखती है। इसके अंतर्गत हार्ड डिस्क, फ्लापी डिस्क, सीडी, डीवीडी, पेन ड्राइव, मेमोरी कार्ड आदि उपकरण आते है। कम्प्यूटर के दो प्रकार के सॉफ्टवेयर होते है :- पहला सिस्टम सॉफ्टवेयर है, जो कम्प्यूटर के हार्डवेयर को ऑपरेट एवं नियंत्रित करता है जबकि दूसरा एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर जो आवश्यकता के अनुरूप सिस्टम सॉफ्टवेयर में डालकर उपयोग किया जाता है जैसे MS Office, Multi Media Player, Photoshop, Web Browser आदि। इस प्रकार कम्प्यूटर सिस्टम या स्मार्ट फोन को इंटरनेट से जोड कर आई.सी.टी. सिस्टम की तरह आवश्यकतानुसार उपयोग किया जा सकता है।

बिन्दु : 4 विद्यालय नेतृत्वकर्ता के आई.सी.टी. संबंधी स्वयं का विकास (**NCSL** क्षेत्र 2 से संबंधित) :-

एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता को ऑनलाईन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए नवीन तकनीकों का ज्ञान होना जरूरी है। इनका उपयोग करके विद्यालय के शिक्षकों और

विद्यार्थियों को ऑनलाईन शिक्षण में आ रही आई.सी.टी. संबंधी समस्याओं को समझकर उसका समाधान किया जा सकता है। इसके लिए आई.सी.टी., इंटरनेट के साथ पोर्टेबल उपकरण अथवा हेन्ड-हेल्ड उपकरण की जानकारी होनी चाहिए, जिसकी सहायता से कम्प्यूटर आधारित शिक्षण कार्य किया जा सकता है। आजकल सर्वाधिक प्रचलित हेन्ड-हेल्ड उपकरण में एन्ड्रायड आधारित मोबाईल या स्मार्ट फोन, टेबलेट, लेपटॉप आदि आते है जो टच-स्क्रीन और चलित उपकरण की तरह कक्षा-कक्ष के भीतर उपयोग किया जा सकता है।

विद्यालय नेतृत्वकर्ता को शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय से संपर्क स्थापित करने के लिए जरूरी एप और वेबसाइट्स की जानकारी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए ऑनलाईन मिटींग हेतु उसे Google Meet, WeBex, Zoom आदि वीडियो कान्फ्रेन्सिंग एप और मेसेजिंग टूल व एप जैसे E-mail, Teligram, Whats app आदि को चलाने में कुषलता होनी आवश्यक है। छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के विद्यालय नेतृत्वकर्ता को भी उपरोक्त आई.सी.टी. संबंधी उपकरणों को भली प्रकार से चलाने मे दक्षता होनी चाहिए। राज्य के ऑनलाईन शिक्षण अधिगम एवं मूल्यांकन प्रक्रिया की समझ एक अनिवार्य योग्यता है। इसे प्राप्त करना आवश्यक व अतिरिक्त अर्हता होनी चाहिये। राज्य शासन स्कूल शिक्षा विभाग, समग्र और एस.सी.ई.आर.टी के संयुक्त प्रयास के विकसित "पढ़ई तुहर दुआर" बुल्टु के बोल, लॉउडस्पीकर क्लास, मोहल्ला एवं पारा क्लास, ऑनलाइन होमवर्क और ऑनलाइन असेसमेंट आदि की समझ बनाकर और नियमित उपयोग से इनमे दक्षता हासिल किया जा सकता है।

विद्यालय नेतृत्व कार्यक्रम में मुख्य क्षेत्र 2 स्वयं का विकास के अन्तर्गत क्षमताओं, रवईयों और मुल्यों के संदर्भ में सकारात्मक स्व-अवधारणा को विकसित करना है एवं चिंतनशील बातचीत के द्वारा आत्म-सुधार के लिए बल देना है। इसके अंतर्गत स्वयं के पेशेवर विकास के लिए, एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता को ऑनलाइन शिक्षण एवं आई.सी.टी.संबंधी उपकरणो और इसके एप्लीकेशन के उपयोग में कुशल होना जरूरी है।

बिन्दु : 5 छत्तीसगढ़ राज्य में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम व मूल्यांकन और प्रशिक्षण प्लेटफार्म (**NCSL** क्षेत्र 3)

विद्यालय नेतृत्व एवं विकास कार्यक्रम के मुख्य क्षेत्र क्रमांक 3 में "शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का रूपांत्रण" हेतु नेतृत्वकर्ता के क्षमता विकास पर बल देता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये विद्यालय में अन्वेषण और रचनात्मकता के लिए जगह बनाना व कक्षा की प्रक्रियाओं को अधिक सृजनात्मक और बाल-केन्द्रित बनाना है। इसके यूनिट 4 में कक्षागत प्रक्रियाओं और प्रभावशीलता को बढ़ाना, के बिन्दु क्रमांक 5 के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में तकनीक (आई.सी.टी.) को बढ़ावा

देना है। छत्तीसगढ़ राज्य में ऑनलाइन शिक्षण अधिगम मूल्यांकन और प्रशिक्षण प्लेटफार्म के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर NISHTHA कार्यक्रम के तहत संचालित होने वाले क्पों ंचचए के साथ 'स्वयं' एप और 'स्वयंप्रभा' एप का उपयोग करके शिक्षक और छात्र शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से उपयोग किया है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण योजना का भी सार्थक उपयोग किया गया जिसका नाम ''पढ़ई तुंहर दुआर'' है। इसके द्वारा ऑनलाइन क्लास का संचालन राज्य स्तर पर टाइम-टेबल बनाकर विषयवार एवं कक्षावार शिक्षण किया गया है। इसके लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों ने ''पढ़ई तुहर दुआर'' के पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन नामांकन किया और अपनी जानकारी की प्रविश्टी की। इसके पश्चात यूसर-आई.डी औ रपासवर्ड का उपयोग करके विद्यार्थी, राज्य के किसी भी जिले के किसी भी शिक्षक द्वारा ली जाने वाली विषय की आनलाइन क्लास में पढ़ाई कर सकते है। विद्यार्थियों को आनलाइन माध्यम से गृहकार्य दिया गया है और इसका मूल्यांकन भी ऑनलाइन ही किया गया। छत्तीसगढ़ राज्य के कुछ वनांचल और दूरस्थ क्षेत्र के ग्रामों में नेटवर्क की समस्या होने के कारण, शिक्षकों ने नवाचारी शिक्षण विधियों से पढ़ाई कराई है। आई.सी.टी. आधारित ये नवाचारी शिक्षण विधियाँ निम्नलिखित है -

(1) 'बुल्टू के बोल' - इसमे ब्लु-टूथ के द्वारा साउंड सिस्टम से कनेक्ट करके कक्षाएं ली गई है।
(2) 'मोहल्ला व पारा क्लास' - इसमे कोविद-19 काल में विद्यालय बंद थे, तब स्थानीय शिक्षत युवा एवं शिक्षकों के द्वारा गांव के मोहल्ला में जाकर महामारी नियमन व सामाजिक दूरी का पालन करते हुए क्लास लिया गया।
(3) 'लॉउड स्पीकर क्लास' - कोरोना काल में ही एक अन्य तकनीक के माध्यम से ग्राम के विद्यार्थियों को खुले मैदान या चौपाल में दूर-दूर बैठाकर लाउड स्पीकर के द्वारा शिक्षकों ने क्लास लिया।

इसके साथ राज्य में शिक्षको के ऑनलाइन प्रशिक्षण Diksha एप के माध्यम से पूरा हुआ है। इसमें छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में माड्यूल CG_1 से लेकर माड्यूल CG_18 तक विभिन्न विषयों एवं संदर्भो और आवश्यकताओं पर आधारित कुल 18 माड्यूल में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है और कोर्स की पूर्णता पर उन्हे और ऑनलाइन प्रमाण पत्र जारी किया गया है। Chalklit (चॉकलीट) एप के द्वारा भी विभिन्न विषयों पर शिक्षकों ने ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य में नेतृत्वकर्ताओं के समूह ने आई.सी.टी. और ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण-अधिगम, मूल्यांकन और प्रशिक्षण प्रक्रिया को कोविड-19 महामारी काल में भी सुचारू रूप से संचालित किया है।

बिन्दु : 6 राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आई.सी.टी. से जुड़ी अकादमिक समस्याओं के सामाधान हेतु तैयारी

छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के संबंध में माड्यूल के पूर्व में विस्तार से चर्चा की गई है। राज्य के कुल 16 जिले नक्सल घटनाओं से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित है। इन क्षेत्रों की मुख्य समस्या अव्यवस्थित जनजीवन, अधोसंरचना और षासकीय संपत्ति का नुकसान होना है। इसमे मुख्यतः सड़क, बिजली, षासकीय भवन, विद्यालय, पंचायत भवन के साथ-साथ मोबाईल के टॉवर को अधिक नुकसान पहुँचा है। ऐसी स्थिति में शाला भवन में प्रत्यक्ष शिक्षण कराना पाना संभव नही हो पाता, तब आई.सी.टी. के माध्यम से ऑनलाइन पढ़ाई एक महत्वपूर्ण विकल्प के रूप् में प्रमुखता से उभरकर सामने आयी है। परन्तु अधिकतर क्षेत्र दुरस्थ वनांचल में अवस्थित होने के कारण कई अन्य तरह की अकादमिक और तकनीकी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें से आई.सी.टी. से जुड़ी मुख्य समस्या के रुप में फुल टाइम और पर्याप्त मोबाईल नेटवर्क का न होना, बिजली का सप्लाई बाधित होना और अई.सी.टी.में एक्सपर्ट शिक्षको की कमी और ज्यादातर विद्यार्थी के पास स्मार्ट-फोन का न होना भी एक बड़ी समास्या है। ऐसे मे कुछ नवाचारी और उत्साही विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं ने स्वयं के व्यय और समुदाय के सहयोग से शाला में अध्ययनरत बच्चों के आई.सी.टी. व ऑनलाइन पढ़ाई के लिए स्मार्ट टी.वी., कम्प्यूटर सिस्टम और इंटरनेट की व्यवस्था करके शिक्षण कार्य करा रहे है। छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगाँव जिले के मोहला ब्लाक के षासकीय उच्च प्राथमिक शाला माटकसा और षासकीय प्राथमिक शाला सोमाटोला बेहतर कार्य किया जा रहा है, जो राज्य के अन्य नक्सल प्रभावित विद्यालयों के साथ अन्य राज्यो के प्ररभावित शालाओं के लिये आई.सी.टी. से जुड़ी अकादमिक समस्याओ के समाधान हेतु आदर्ष उदाहरण और प्रेरणास्रोत है। (संलग्न - परिषिश्ट में छायाचित्र)

सारांश :-

इस पूरे माड्यूल में छत्तीसगढ़ राज्य के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों की शालाओं की अधोसंरचना और ICT तथा ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम से जुड़ी समस्याओं पर विस्तापूर्वक चर्चा की गई है। इसमे यह बात भी सामने आई है कि नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अकादमिक शिक्षण-अधिगम गतिविधियों का संचालन करना किसी बड़ी चुनौति से कम नही है क्योकि इन क्षेत्रों में अधोसंरचना का अभाव है और ICT व नवीन शिक्षण तकनीक में कुषल नेतृत्वकर्ताओं और शिक्षकों की कमी है। तथापि इन शालाओं के ऊर्जावान और समर्पित शिक्षकों ने सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग करके ऑनलाइन प्लेटफार्म पर स्वयं प्रशिक्षण प्राप्त किया है और राज्य के शिक्षा विभाग के पोर्टल 'पढ़ई तुंहर द्वार' के साथ DIKSHA, NISHTHA, स्वयंप्रभा और Chalklit आदि एप्प के माध्यम से शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन प्रक्रिया को गति प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है।

नक्सल क्षेत्रों की उक्त उल्लिखत समस्याओं के बाद भी यहाँ के विद्यालयों में कार्यरत कुछ नेतृत्वकर्ताओं व शिक्षकों ने अकादमिक समस्यओं के समाधान हेतु कुछ नई पहल प्रस्तुत की है। इन्होने

समुदाय के सहयोग और स्वयं के व्यय से विद्यालय को स्मार्ट टी.वी. और ऑनलाइन शिक्षण हेतु ICT उपकरण क्रय करके भेंट किया है। न केवल मुफ्त में दिया है, बल्कि इसका उपयोग करके कोरोना काल में भी बच्चों को नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षा संचालित की है। इसके एक कदम आगे जाकर विशयवस्तु पर NEP 2020 में उल्लिखित अगमेन्टड और वर्चुअल क्लास आदि बनाकर शिक्षण कराया है। इनके द्वारा नक्सल क्षेत्रों की शालाओं में उक्त प्रयास न केवल उल्लेखनीय है, अपितु सराहनीय भी है। सभी विद्यालय नेतृत्वकर्ताओं को इस प्रकार के नवीन प्रयासों के सीख लेकर, अपने विद्यालय में अकादमिक और ICT आधारित गतिविधियों की विकास योजना अवष्य बनाना चाहिए।

संदर्भ सामग्री :-

1. नई राश्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. NEP 2020 के मुख्य क्षेत्र और क्रियान्वयन टास्क क्र. 01 से 297 तक में वर्णित गतिविधियाँ।
3. राष्ट्रीय विद्यालय नेतृत्व केन्द्र, नई दिल्ली की राश्ट्रीय कार्यक्रम की रूपरेखा और पाठ्यचर्या का ढांचा।
4. 'नक्सलवाद के संबंध में' लोकसभा का अतारांकित प्रष्न क्र. 828 का माननीय गृह राज्य मंत्री का लोकसभा में उत्तर, भारत सरकार, नई दिल्ली, दिनांक 01/03/2016
5. छत्तीसगढ़ राज्य के अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन पर राज्यपाल का प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़, शासन, रायपुर वर्ष 2016-17 पृ.क्र. 3,7 और 192.--
6. छत्तीसगढ़ राज्य आर्थिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन, छत्तीसगढ़, शासन, रायपुर, वर्ष 2019-20.
7. कुमार, संजय, पी-एच.डी उपाधि हेतु शोध संक्षेपिका 2012 शीर्शक -नक्सल प्रभावित क्षेत्र में संप्रेशण : वर्तमान स्थिति और प्रभाव (छ.ग. के बस्तर संभाग के विषेश संदर्भ में), कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विष्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़।
8. मोबाइल एप आधारित आंकलन, राज्य स्तरीय आंकलन 2019-20, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिशद्, षंकरनगर, रायपुर, छत्तीसगढ़।
9. NISHTHA(National Initiative for Shool Heads and Teachers Holistic Advancement) एप के माड्यूल PRELIMS-0 स्कूल लीडरषिप पैकेज 5 भाग और माड्यूल-6 शिक्षण अधिगम और आंकलन में प्ब्ज् को शामिल करना।
10. DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing "MHRD+NCTE" Collaborative Programme) एप के छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में माड्यूल CG-5 शिक्षण अधिगम और मूल्यांकन में ICT का समन्वय और माड्यूल CG-13 विद्यालय नेतृत्व : संकल्पना और अनुप्रयोग।

&&&000&&&

परिशिष्ट:- छायाचित्र

Figure 2 छ.ग. के उत्कृष्ट प्रभावित उच्च प्राथमिक शाला माटकसा में ICT

Figure 3 उच्च प्राथमिक षाला माटकसा में विद्यालय नेतृत्वकर्ता के ऑगमेटेड रियलिटी 3 डी इमेज की सहायता से रूचिपूर्वक विषय की बेहतर समझ बनाती छात्रा।

माड्यूल आलेख

डॉ. मकसूद अहमद

(व्याख्याता)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खैरागढ़